सिलसिलए

फ़ैज़ाने अ-श-रए मुबश्शरह के छटे सहाबी

Hazrate Sayyiduna Zubair Bin Avvaam (Hindi)

رضي الله تعالى عنه

हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अव्वाम

मज़ारे सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अव्वाम

- इस्लाम की नौ ख़ैज़ कली
- गौहरे नायाब की परवरिश
- मुजाहिदे अव्वल
- महब्बत की कसोटी
- बा करामत बरछी
- इख़्लास की गवाही

जिन्नात के वफ़्द से मुलाक़ात

المدينة العلمية (دعوت اسلامی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(المستطرف ج١ ص٤٠ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

येह रिसाला (**हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद
के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

www.dawateislami.net

सिल्सिलए फ़ैज़ाने अ़-श-रए मुबश्शरह के छटे सह़ाबी

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

पेशकश
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी)

शो'बए बयानाते म-दनी चेनल

नाशिर

मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद

www.dawateislami.net

الصلوۃ والسلام علیک یارسول اللہ وعلٰی اٰلک واصحٰبک یا حبیب اللہ

नाम किताब : ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

(शो'बए बयानाते म-दनी चेनल)

सिने त़बाअ़त : जून 2016 सि.ई.

नाशिर : मक-त-बतुल मदीना, अह़मदआबाद

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 10 र-जबुल मुरज्जब 1432 हि. **ह़वाला :** 172

الحمد للہ رب العٰلمین والصلوۃ والسلام علٰی سید المرسلین وعلٰی اٰلہ واصحابہ اجمعین

तस्दीक़ की जाती है कि किताब

"ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ**"**

(मत़्बूआ़ **मक-त-बतुल मदीना**) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़्रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे अ़क़ाइद, कुफ़्रिय्या इ़बारात, अख़्लाक़िय्यात, फ़िक़्ही मसाइल और अ़-रबी इ़बारात वग़ैरा के ह़वाले से मक़्दूर भर मुला-ह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़-लत़ियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल (दा'वते इस्लामी)

13 - 6 - 2011

E-mail.ilmia26@dawateislami.net

म-दनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं है।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

म-दनी चेनल के सिल्सिला "फ़ैज़ाने सहाबए किराम" के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से इस रिसाले को पढ़ने की "14 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** **نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ ٥** मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।

(المعجم الکبیر للطبرانی، الحدیث: ۵۹۴۲، ج۶، ص ۱۸۵)

दो म-दनी फूल :

1...... बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़-मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

2...... जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़हे पर ऊपर दी हुई दो अ़-रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴾5﴿ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और ﴾6﴿ क़िब्ला रू मुता-लआ़ करूंगा ﴾7﴿ क़ुरआनी आयात और ﴾8﴿ अह़ादीसे मुबा-रका की ज़ियारत करूंगा ﴾9﴿ जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴾10﴿ जहां जहां "सरकार" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा ﴾11﴿ शर-ई मसाइल सीखूंगा ﴾12﴿ अगर कोई बात समझ न आई तो उ़-लमा से पूछ लूंगा ﴾13﴿ सीरते सह़ाबा पर अ़मल की कोशिश करूंगा ﴾14﴿ किताबत वग़ैरा में शर-ई ग़-लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी तौ़र पर मुत्तलअ़ करूंगा (मुसन्निफ़ या नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

www.dawateislami.net

Tip1:Click on any heading, it will send you to the required page.
Tip2:at inner pages, Click on the Name of the book to get back(here) to contents.

﴾786﴿ फ़ेहरिस्त ﴾92﴿

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या का तआ़रुफ़	6	मह़ब्बत की कसोटी	25
		इस्लाम व हिजरत	28
पहले इसे पढ़ लीजिये	8	कमसिन मुहाजिर	29
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	9	शुजाअ़त व बहादुरी	31
कुफ़्र की शबे दैजूर	10	ग़ज़्वए बद्र में कारनामा	32
तुलूए़ आफ़्ताबे आ़लम ताब	11	फ़िरिश्तों के इमामे	32
इस्लाम की नौ ख़ैज़ कली	11	बा करामत बरछी	32
वोह जो न हों तो कुछ न हो	12	ग़ज़्वए उ़हुद में बहादुरी	34
सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का तआ़रुफ़	15	यहूदी पहलवानों का ग़ुरूर ख़ाक में मिल गया	34
तआ़रुफ़े शख़्सय्यत ब ज़बाने शख़्सय्यत	15	सब से ज़ियादा बहादुर	36
		ज़ख़्मी जिस्म	37
सय्यिदुना ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का हुल्यए मुबा-रका	17	राहे ख़ुदा में ज़ख़्म	37
		ख़ानदाने ज़ुबैर बिन अ़व्वाम	39
गौहरे नायाब की परवरिश	18	औलाद	39
बहादुर मां	19	हिजरत के बा'द पहले मौलूदे मस्ऊ़द	40
अन्दाज़े तरबियत	20		
मुजाहिदे अव्वल	22	म-दनी सोच	41
मुजाहिदीन के सरख़ील	23	फ़ज़ाइलो मनाक़िब	44

www.dawateislami.net

जन्नत की बिशारत	44	सरकार के बुलावे पर लब्बैक कहने वाले	53
दुन्या व आख़िरत के ह़वारी	45		
जन्नती पड़ोसी	47	इख़्लास की गवाही	54
सलामे जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام	47	सय्यिदुना ज़ुन्नूरैन की गवाही	59
सरकार का "فِدَاکَ اَبِیْ وَاُمِّی" फ़रमाना	48	जिन्नात के वफ़्द से मुलाक़ात	60
		ख़ौफ़े ख़ुदा	62
दीन का सुतून	49	बयाने ह़दीस में एह़तियात़	62
करीमुन्नास	50	आप से मरवी ह़दीसे मुबा-रका	63
दियानत दारी	50	अ़-श-रए मुबश्शरह की निस्बत से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दस फ़ज़ाइल	63
काम्याब ताजिर	51		
स-दक़ा व ख़ैरात	51	शहादत	66
फ़त्ह़े मक्का के मौक़अ़ पर मै-सरह के सालार	52	क़ातिल को जहन्नम की ख़बर	66
		क़र्ज़ की अदाएगी	66
ग़ज़्वए बद्र के शह सुवार	52	मआख़िज़ो मराजेअ़	70
माले ग़नीमत में ह़िस्सा	53	☆☆☆☆☆	

﴾ दुन्या मोमिन के लिये क़ैदख़ाना है ﴿

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **"दुन्या मोमिन के लिये क़ैदख़ाना और काफ़िर के लिये जन्नत है।"** (صحیح مسلم، الحدیث: ۲۹۵۶، ص ۱۵۸۲)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی اِحْسَانِہٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِہٖ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **''दा'वते इस्लामी''** नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मु-तअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **''अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या''** भी है जो दा'वते इस्लामी के उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम کَثَّرَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल छ[6] शो'बे हैं :

(1) शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत (2) शो'बए तराजिमे कुतुब
(3) शो'बए दर्सी कुतुब (4) शो'बए इस्लाही कुतुब
(5) शो'बए तफ़्तीशे कुतुब (6) शो'बए तख़्रीज

''अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या'' की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत,

www.dawateislami.net

माह़िये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती म-दनी काम में हर मुम्किन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **''दा'वते इस्लामी''** की तमाम मजालिस ब शुमूल **''अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या''** को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़-मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

र-मज़ानुल मुबारक 1425 हि.

www.dawateislami.net

पहले इसे पढ़ लीजिये

फ़ैज़े नुबुव्वत से तरबियत पाने और रब عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा का मुज़्दा ह़ासिल करने वालों में सह़ाबए किराम का शुमार हरावल दस्ते के तौ़र पर होता है और इन में भी कुछ हस्तियां ऐसी हैं जिन की बे शुमार दीनी ख़िदमात पर उन्हें दुन्या ही में जन्नत की नवीद दी गई। यूं तो मुख़्तलिफ़ अवक़ात में जन्नत की बिशारत पाने वाले सह़ाबए किराम कई हैं मगर दस ऐसे जलीलुल क़द्र और ख़ुश नसीब सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان हैं जिन को आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मिम्बर शरीफ़ पर खड़े हो कर एक साथ नाम ले ले कर जन्नती होने की ख़ुश ख़बरी सुनाई। इन ख़ुश नसीबों को ''**अ़-श-रए मुबश्शरह**'' कहा जाता है जिन के अस्माए गिरामी येह हैं : ﴿1﴾ ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ ﴿2﴾ ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ ﴿3﴾ ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी ﴿4﴾ ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा ﴿5﴾ ह़ज़रते त़ल्ह़ा बिन **उ़बैदुल्लाह** ﴿6﴾ ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अ़व्वाम ﴿7﴾ ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ ﴿8﴾ ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास ﴿9﴾ ह़ज़रते सईद बिन ज़ैद ﴿10﴾ ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان

(سنن الترمذی، کتاب المناقب، مناقب عبدالرحمن بن عوف، الحدیث: ۳۷۶۸، ج۲، ص۲۱۶)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के शो'बे म-दनी चेनल पर उम्मते मुस्लिमा को दरबारे नुबुव्वत के इन चमक्ते सितारों की सीरत से आगाह करने का सिल्सिला जारी व सारी है। मजसिले **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** के शो'बा ''बयानाते म-दनी चेनल'' के म-दनी उ़-लमा كَثَّرَهُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی की अन्थक काविशों के सबब पेशे नज़र रिसाला इसी सिल्सिले की एक कड़ी है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ''**दा'वते इस्लामी**'' की तमाम मजालिस ब शुमूल **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** को दिन 11वीं और रात 12वीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना के मत़्बूआ़ 50 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाला, **''जन्नती महल का सौदा''** सफ़ह़ा **1** पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत ज़िक्र करते हुए फ़रमाते हैं कि मालिके ख़ुल्दो कौसर, शाहे बह़रो बर, मदीने के ताजवर, अम्बिया के सरवर, रसूले अन्वर, मह़बूबे दावर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बख़्शिश निशान है : **''अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर आपस में मह़ब्बत रखने वाले जब बाहम मिलें और मुसा-फ़ह़ा करें और नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक भेजें तो उन के जुदा होने से पहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं।''[1]

[1] .....مسند ابی یعلی، الحدیث ۲۹۵۱، ج۳، ص۹۵

www.dawateislami.net

कुफ़्र की शबे दैजूर

छटी सदी ईसवी में शिर्क और बुत परस्ती की बीमारी काएनाते अर्ज़ी के गोशे गोशे को एक वबा की त़रह़ अपनी लपेट में ले चुकी थी। मख़्लूक़ का रिश्ता अपने ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी से टूट चुका था, उन की अख़्लाक़ी, मुआ़-श-रती, मआ़शी और सियासी ज़िन्दगी में ऐसे तबाह कुन फ़सादात पैदा हो चुके थे जिन का तसव्वुर ही सईद रूहों पर लरज़ा त़ारी करने के लिये काफ़ी है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस दौर में चहार सू शबे दैजूर (अंधेरी रात) का आ़लम था और इन्सान ख़ुदा फ़रामोश ही नहीं बल्कि ख़ुद फ़रामोश भी बन चुका था, ग़फ़्लत व गुमराही की गुम गश्ता राहों में भटक कर उसे येह तक न याद रहा कि वोह ख़ालिक़े काएनात की शाने तख़्लीक़ का शाहकार है और जिस का मक़्सदे तख़्लीक़ सिर्फ़ येह है कि वोह अपने ख़ालिक़ो मालिक को पहचाने और इ़श्क़ो मह़ब्बत के जज़्बात से सरशार हो कर उस की बारगाहे अ़-ज़-मतो कमाल में बेख़ुदी से अपना सरे नियाज़ झुका दे और अपनी बन्दगी, बे चा-रगी और बे कसी व बे बसी का इज़्हार करे मगर हाए अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! येह सब कुछ करने के बजाए इस कमज़ोर व बेबस इन्सान ने ह़क़ीक़ी मा'बूद को छोड़ कर फ़ानी मख़्लूक़ को अपना मा'बूद बना लिया और इ़ज़्ज़तो करामत की ख़िल्अ़ते फ़ाख़िरा (उ़म्दा व बेश क़ीमत लिबास) को चाक कर के बे जान पथ्थरों के सामने झुक गया।

www.dawateislami.net

तुलूए आफ़्ताबे आ़लम ताब

आख़िर बात़िल का पर्दा चाक होता है और शबे दैजूर का अंधेरा छटता है। वादिये बत़्हा के उफ़ुक़ से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नूरे हिदायत का आफ़्ताबे आ़लम ताब बन कर जल्वा गर होते हैं जिस की ताबानियों से न सिर्फ़ कुर्रए अ़र्ज़ बुक़्अ़ए नूर (रोशन जगह) बन जाता है बल्कि मख़्लूक़ का ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी से टूटा हुवा रिश्ता भी दोबारा उस्तुवार हो जाता है।

इस्लाम की नौ ख़ैज़ कली :

वादिये बत़्हा के एक नौ जवान ने जब कुफ़्र की अंधेरी वादियों से निकल कर नूर के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दा'वते ह़क़ पर लब्बैक कहा तो बात़िल की अंधेरी वादियों में भटक्ने वाला उस का चचा येह गवारा न कर सका और गुस्से से बे क़ाबू हो कर उस ने येह इरादा कर लिया कि अपने भतीजे को मजबूर कर देगा कि वोह नए दीन को छोड़ कर फिर अपने आबाई दीन की त़रफ़ लौट आए। चुनान्चे उस ने इस्लाम की उस नौ ख़ैज़ कली को एक चटाई में लपेटा, फिर रस्सी से बांध कर लटका दिया और नीचे से धुवां देने लगा ताकि आज की येह कली कल का ह़सीन व महक्ता फूल न बन सके। फिर उस बात़िल परस्त ने ह़क़ के अ़लम बरदार से कहा इस अ़ज़ाब से बचना चाहते हो तो इस्लाम से मुंह मोड़ लो मगर जिस का दिल नूरे ईमान से मुनव्वर हो जाए उस के सामने दुन्या की तमाम तक्लीफ़ें हेच हैं। भला वोह क्यूंकर उस दीन को ख़ैरआबाद कहता

www.dawateislami.net

कि जिस के मु-तअ़ल्लिक़ ख़ालिक़े काएनात عَزَّوَجَلَّ ने अपनी लारैब किताब क़ुरआने मजीद में इर्शाद फ़रमाया :

اِنَّ الدِّیْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ

(پ۳، ال عمران:۱۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** के यहां इस्लाम ही दीन है।

चचा उस नौ जवान को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पसन्दीदा दीने मतीन से हटाने और कुफ़्र की अंधेरी वादी में लौटने के लिये बराबर तक्लीफ़ देता रहा लेकिन शम्ए नुबुव्वत के उस परवाने के हौसले व इस्तिक़ामत पर क़ुरबान जाइये ! इस ह़ालते पुरसोज़ में भी हर बार येही जवाब दिया : لَا اُكَفِّرُ اَبَدًا (मैं कभी कुफ़्र इख़्तियार नहीं करूंगा) गोया कहता : लज़्ज़ते इ़श्क़े ह़क़ीक़ी का मज़ा चखने वाला कभी कुफ़्र इख़्तियार नहीं करता।[1]

बात़िल के अंधेरों में भटक्ने वाले चचा ने जब देखा कि उस का भतीजा कभी अपने आबाई दीन पर वापस न लौटेगा तो बिल आख़िर उस ने हार मान कर अपने भतीजे को उस के ह़ाल पर छोड़ दिया और इस त़रह़ बात़िल का मुंह काला और ह़क़ का बोलबाला हो गया।[2]

वोह जो न हों तो कुछ न हो :

प्यारे इस्लामी भाइयो ! एक दिन येही नौ जवान वादिये

---

[1] ..... المستدرک، کتاب معرفة الصحابة، کان عم زبیر یعلق الزبیر فی حصیر۔ الحدیث: ۵۶۰۱، ج ۴، ص ۴۳۶۔ مفهوماً

[2] ..... معرفة الصحابة لابی نعیم، معرفة الزبیر بن العوام، الحدیث: ۴۱۳، ج ۱، ص ۱۲۱۔ ملتقطاً

www.dawateislami.net

बत़्हा से बाहर दिन के वक्त महूवे आराम था कि उस ने शैत़ान की फैलाई हुई येह जान लेवा अफ़्वाह सुनी कि (مَعَاذَاللّٰہ) रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कुफ़्फ़ारे मक्का ने शहीद कर दिया है, येह अन्दोह-नाक ख़बर उस के दिल पर बिजली बन कर गिरी और सिवाए इस बात के कुछ समझ में न आया कि जिन के सदक़े इस दुन्या में जीने का सलीक़ा मिला, उन के बिग़ैर जीने का क्या मज़ा। आ'ला ह़ज़रत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن ने क्या ख़ूब इर्शाद फ़रमाया है :

वोह जो न थे तो कुछ न था वोह जो न हों तो कुछ न हो
जान हैं वोह जहान की, जान है तो जहान है

शम्ए़ नुबुव्वत के इस परवाने ने जब येह सुना कि जाने जहान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم विसाल फ़रमा गए हैं तो येह पुख़्ता इरादा कर लिया कि अहले जहां को भी इस जहाने आबो गिल में ज़िन्दा रहने का कोई ह़क़ नहीं। पस येह इरादा बांधा और तमाम अहले मक्का को सफ़्ह़ए हस्ती से मिटा देने का जज़्बा ले कर उस जवां मर्द ने तलवार निकाली और इस ह़ाल में अहले मक्का की त़रफ़ दौड़ पड़ा कि जिस्म पर मुनासिब लिबास भी मौजूद न था, बस जिस ह़ालत में था चल पड़ा। किसी शाइ़र ने क्या ख़ूब कहा :

बे ख़त़र कूद पड़ा आतशे नमरूद में इ़श्क़
अक़्ल है महूवे तमाशाए लबे बाम अभी

www.dawateislami.net

येह नौ जवान अभी कुछ दूर ही पहुंचा था कि सामने से दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह्रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रुख़े ज़ैबा का दीदार हो गया और उस की जान में जान आई। शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस नौ जवान की येह ह़ालत व कैफ़िय्यत देख कर सबब दरयाफ़्त फ़रमाया तो उस ने शैत़ान की कारस्तानी का सारा माजरा अ़र्ज़ कर दिया। सरकारे वाला तबार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह सब सुन कर दरयाफ़्त फ़रमाया : तुम क्या करने वाले थे ? अ़र्ज़ की : बस मैं ने इरादा कर लिया था कि बिग़ैर किसी तमीज़ के अहले मक्का को तहे तैग़ (तलवार से क़त्ल) करता चला जाऊंगा, ख़ून की नहरें बहा दूंगा और किसी को भी ज़िन्दा न छोड़ूंगा। सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस नौ जवान का इ़श्क़ो मस्ती से सरशार जज़्बा देख कर तबस्सुम फ़रमाया और न सिर्फ़ अपनी चादर मुबारक अ़त़ा फ़रमाई बल्कि उसे और उस की तलवार को अपनी दुआ़ओं से भी नवाज़ा।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर जान क़ुरबान करने और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दुश्मनों की जान लेने का जज़्बा रखने वाले उस बहादुर नौ जवान को आज सारी दुन्या ह़ज़रते सय्यिदुना **ज़ुबैर बिन अ़व्वाम** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नाम से जानती है।

---

[1] ..... الریاض النضرة، الباب السادس فی ذکر مناقب الزبیر بن العوّام، الفصل السادس فی ذکر خصائصه، ج ۲، ص ۲۷۴ ..... تاریخ مدینة دمشق، ج ۱۸، ص ۳۴۴

www.dawateislami.net

करूं तेरे नाम पे जां फ़िदा न बस एक जां दो जहां फ़िदा

दो जहां से भी नहीं जी भरा करूं क्या करोड़ों जहां नहीं

सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का तआ़रुफ़

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 346 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**करामाते सह़ाबा**" सफ़ह़ा 120 पर शैख़ुल ह़दीस ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का तआ़रुफ़ कुछ यूं ज़िक्र फ़रमाते हैं कि येह हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फूफी ह़ज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के फ़रज़न्द हैं। इस लिये येह रिश्ते में शहन्शाहे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फूफीज़ाद भाई और ह़ज़रते सय्यिदह ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के भतीजे और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दामाद हैं। येह भी अ-श-रए मुबश्शरह या'नी उन दस ख़ुश नसीब सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم में से हैं जिन को हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जन्नती होने की ख़ुश ख़बरी सुनाई।[1]

तआ़रुफ़े शख़्सय्यत ब ज़बाने शख़्सय्यत :

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم में कुछ ऐसी ख़ुश नसीब हस्तियां भी हैं जिन को हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से नसबी क़राबत

1..... करामाते सह़ाबा, स. 120

www.dawateislami.net

(ख़ानदानी तअ़ल्लुक़) का ए'ज़ाज़ भी ह़ासिल है। ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी उन्ही ख़ुश बख़्तों में से एक हैं। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल क़ासिम **अ़ब्दुल्लाह** बिन मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बग़वी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 317 हि.) **मो'जमुस्सह़ाबा** में ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी एक रिवायत नक़्ल फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक बार उन से इर्शाद फ़रमाया : "ऐ मेरे लख़्ते जिगर ! मेरे और सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरमियान रेह़्म और क़राबत का रिश्ता है रेह़्म का इस त़रह़ कि मेरे निकाह़ में तुम्हारी वालिदा (सय्यिदह अस्मा बिन्ते अबी बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) हैं और सरवरे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के निकाह़ में तुम्हारी ख़ाला उम्मुल मुअमिनीन आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا हैं और क़राबत के रिश्ते को तो तुम जानते ही हो, या'नी मेरे वालिद की फूफी उम्मे ह़बीबा बिन्ते असद सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की (वालिदए माजिदा सय्यिदह आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की) नानी हैं, मेरी वालिदए माजिदा (सय्यि-दतुना सफ़िय्या बिन्ते अ़ब्दुल मुत्त़लिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फूफी हैं, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वालिदए माजिदा सय्यिदह आमिना बिन्ते वह़ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا और मेरी नानी हाला बिन्ते उहैब चचाज़ाद बहनें हैं और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजए मोह़-त-रमा उम्मुल मुअमिनीन

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यि-दतुना ख़दी-जतुल कुब्रा बिन्ते ख़ुवैलद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا मेरी फूफी हैं ।''[1]

सय्यिदुना ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ह़ुल्यए मुबारक :

सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان और ख़ुसूसन अ़-श-रए मुबश्शरह की सीरत के साथ साथ इन की सूरत से आश्ना होना भी फ़ाएदे से ख़ाली नहीं । चुनान्चे, मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की **आंखें** नीली, **शाने** क़दरे झुके हुए, **बाल** ख़ूब घने, **रुख़्सार** और **रीश मुबारक** हलकी और पतली, **रंगत** गन्दुमी (और एक रिवायत में गोरी) और **क़ामत** इस क़दर त़वील थी कि जब सुवारी पर सुवार होते तो पाउं ज़मीन पर लग जाते ।[2] बाल मज़्बूत़ और त़वील थे । चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि बचपन में मैं अपने वालिदे गिरामी ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के शानों[3] पर लटके हुए बाल पकड़ कर कमर पर लटक जाया करता ।[4] और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बाल आख़िर उ़म्र तक बिल्कुल सफ़ेद न हुए ।[5]

---

[1] .....معجم الصحابہ، باب الزاء، الزبیر بن العوّام، الحدیث: ۷۸۷، ج ۲، ۴۲۶

[2] .....تاریخ الاسلام للامام الذھبی، ج ۳، ص ۴۹۸

[3] ..... हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मूए मुबारक कभी निस्फ़ कान तक, कभी कान की लौ तक होते और जब बढ़ जाते तो शाने मुबारक से छू जाते । (बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 586)

[4] .....عمدۃ القاری، کتاب الخمس، باب برکۃ الغازی فی مالہ۔۔الخ، ج ۱۰، ص ۴۶۴

[5] .....الطبقات الکبری، الرقم: ۳۲ الزبیر بن العوّام، ج ۳، ص ۷۹

www.dawateislami.net

गौहरे नायाब की परवरिश :

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हीरा कान से निकलता है तो एक बे वक़्अ़त पथ्थर की हैसिय्यत रखता है मगर जब किसी माहिर जोहरी के हाथ में आता है और वोह उस ना तराशीदा व बे वक़्अ़त पथ्थर को तराश्ता है तो आंखें ख़ीरा हो कर रह जाती हैं। बिल्कुल इसी त़रह़ बच्चा पैदा होता है तो एक कोरे काग़ज़ की त़रह़ होता है जिस पर जो भी तह़रीर लिख दी जाए उस के नुक़ूश बाक़ी ज़िन्दगी में बड़े वाज़ेह़ त़ौर पर देखे जा सकते हैं। येही वज्ह है कि समझदार वालिदैन हमेशा अपने बच्चों की अच्छी तरबियत पर ख़ुसूसी तवज्जोह देते हैं और उन की ख़्वाहिश होती है कि उन के जिगर गोशे अ़-मली मैदान में क़दम रखें तो दुन्या की तलातुम ख़ैज़ मौजों के सामने इस्तिक़ामत का पहाड़ साबित हों और उन के पायए इस्तिक़्लाल में कभी फ़र्क़ न आए।

बच्चों की तरबियत की ज़िम्मेदारी मां बाप दोनों की होती है और अगर कोई एक न हो तो दूसरे पर येह ज़िम्मेदारी मज़ीद बढ़ जाती है। कुछ ऐसा ही ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ भी हुवा क्यूं कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिद जब आप को बचपन ही में छोड़ कर इस जहाने फ़ानी से कूच कर गए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तरबियत की तमाम ज़िम्मेदारी वालिदए माजिदा ह़ज़रते सय्यि-दतुना सफ़िय्या बिन्ते अ़ब्दुल मुत्त़लिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا पर आ गई जो न सिर्फ़ सरदारे क़ुरैश की साह़िब ज़ादी और सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा

www.dawateislami.net

सय्यिदुश्शु-हदा ह़ज़रते सय्यिदुना अमीर ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सगी बहन थीं बल्कि ख़ुद भी एक बहादुर ख़ातून थीं। चुनान्चे,

बहादुर मां :

मुस्नदे बज़्ज़ार में है कि ग़ज़्वए ख़न्दक़ के मौक़अ़ पर जब सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कुफ़्फ़ारे मक्का के साथ बर-सरे पैकार होने के लिये निकले तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अज़्वाजे मुत़ह्हरात और अपनी फूफी ह़ज़रते सय्यि-दतुना सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ को एक बुलन्द और मह़फ़ूज़ मकान में मुन्तक़िल फ़रमा दिया और उन की ह़िफ़ाज़त के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुक़र्रर फ़रमाया। यहूदियों को मा'लूम हुवा तो उन्हों ने मौक़अ़ को ग़नीमत जानते हुए अपनी शर पसन्द त़बीअ़त के मुत़ाबिक़ मुसल्मानों को ईज़ा पहुंचाने का नापाक इरादा कर लिया और एक यहूदी ने सूरते ह़ाल जानने के लिये ह़-रमे मुस्त़फ़ा में छुप कर झांकने की नापाक जसारत की मगर ह़ज़रते सय्यि-दतुना सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने उसे देख लिया और ह़ज़रते ह़स्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इर्शाद फ़रमाया : आगे बढ़ कर उस का काम तमाम कर दीजिये। मगर उन्हों ने अ़र्ज़ की : मैं ऐसा नहीं कर सकता, अगर लड़ने की त़ाक़त रखता तो मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के शाना ब शाना मैदाने जिहाद में नज़र आता। चुनान्चे उन की मा'ज़िरत सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने ख़ुद आगे बढ़ कर उस यहूदी का सर तन से जुदा कर दिया और

www.dawateislami.net

फ़िर ह़ज़रते ह़स्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया कि अब इस का सर बाहर मौजूद यहूदियों की जानिब फेंक दे मगर उन्हों ने इस से भी मा'ज़िरत कर ली तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने ख़ुद ही आगे बढ़ कर उस का सर मकान से बाहर फेंक दिया। जब दूसरे शर पसन्द यहूदियों ने अपने साथी का ह़ाल देखा तो फ़ौरन दुम दबा कर येह कहते हुए भाग खड़े हुए कि हमें तो येह पता चला था कि ख़्वातीन की ह़िफ़ाज़त पर किसी को मुक़र्रर नहीं किया गया मगर अन्दर तो मुहाफ़िज़ मौजूद हैं।[1]

अन्दाज़े तरबियत :

मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिद के बा'द जब आप की तरबियत की तमाम ज़िम्मेदारी ह़ज़रते सय्यि-दतुना सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के ना तुवां कन्धों पर आन पड़ी, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को अपनी ज़िम्मेदारी का ख़ूब एह़सास था येही वज्ह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तरबियत में कोई दक़ीक़ा फ़रो गुज़ाश्त न रहने दिया या'नी किसी लम्ह़ा उन की तरबियत से ग़ाफ़िल न हुईं। चुनान्चे,

मरवी है कि बाप के विसाल के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने चचा नौफ़ल बिन ख़ुवैलद की ज़ेरे कफ़ालत थे। एक दिन वोह ख़ैरो आ़फ़िय्यत दरयाफ़्त करने आया तो क्या देखता है कि ह़ज़रते सय्यि-दतुना सफ़िय्या

[1]......البحر الزخار، مسند الزبیر بن العوام، الحدیث: ۹۷۸، ج ۳، ص ۱۹۱ ۔ مفهوماً

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अपने लख़्ते जिगर को डांटने के साथ साथ मार भी रही हैं तो उस से रहा न गया और बोला येह क्या कर रही हैं ? भला इन नाज़ुक कलियों को इस त़रह़ मारा जाता है। तो आप ने जवाब में येह अश्आ़र पढ़े :

مَنْ قَالَ اِنِّیْ اُبْغِضُہٗ فَقَدْ کَذَبْ وَاِنَّمَا اَضْرِبُہٗ لِکَیْ یُلَبّ

وَیَہْزِمَ الْجَیْشَ وَیَاْتِیْ بِالسَّلَبْ وَلَا یَکُنْ لِّمَالِہٖ خَبَاٌ مُخَبْ

یَاْکُلُ فِی الْبَیْتِ مِنْ تَمْرٍ وَّحَبْ

या'नी जो येह कहे कि मैं इसे ना पसन्द करती हूं वोह झूटा है, मैं तो इसे इस लिये मार रही हूं ताकि येह बहादुर व दानाई का अ़लम बरदार बने, दुश्मन के लश्करों को अकेला ही पछाड़ कर रख दे और उन के मालो अस्बाब को बत़ौरे ग़नीमत छीन लाए, इस के माल पर नज़र रखने वालों को छुपने की कोई जगह न मिले और येह आज़ादी से घर में ख़ूब खाता पीता रहे (अगर येह मुझे ना पसन्द होता तो इस त़रह़ आज़ादी से न खाता पीता)।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यि-दतुना सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अपने लख़्ते जिगर की जो तरबियत की थी उस की झलक ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बचपन से ले कर वक़्ते विसाल तक बड़ी वाज़ेह़ रही। चुनान्चे,

---

[1] .....الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ، الرقم ۲۷۹۶ الزبیر بن العوّام، ج ۲، ص ۴۵۸

www.dawateislami.net

मरवी है कि एक बार एक लड़का ह़ज़रते सय्यि-दतुना सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और पूछा : ज़ुबैर कहां हैं ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने दरयाफ़्त फ़रमाया : तुम उस के मु-तअ़ल्लिक़ क्यूं पूछ रहे हो ? बोला : मैं उन से कुश्ती करना चाहता हूं। तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने बड़ी ख़ुशी से बता दिया कि ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहां हैं। जब उस लड़के ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कुश्ती की तो आप न सिर्फ़ उस पर ग़ालिब आ गए बल्कि उस का हाथ भी तोड़ दिया। उस लड़के को ह़ज़रते सय्यि-दतुना सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास लाया गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने उसे तक्लीफ़ में मुब्तला देख कर पूछा :

كَيْفَ وَجَدْتَّ زَبْرَا اَ اَقِطاً و تَمْرَا

اَو مُشْمَعِلًّا صَقْرَا

तरजमा : ज़रा येह तो बताते जाओ कि ज़ुबैर को कैसा पाया ? क्या इसे पनीर या ख़जूर समझ कर खा गए या इसे चाक़ो चौबन्द शिक्रे की त़रह़ पाया जो तुम्हें खा गया ?[1]

मुजाहिदे अव्वल :

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदए माजिदा ह़ज़रते सय्यि-दतुना सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की तरबियत ने अपना असर दिखाया और उन्हों ने बचपन में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जिस बहादुरी

---

[1] .....الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ، الرقم ۲۷۹۶ الزبیر بن العوّام، ج ۲، ص ۴۵۸

www.dawateislami.net

व जवां मर्दी का दर्स दिया था वोह सारी ज़िन्दगी आप पर ग़ालिब रहा। येही वज्ह है कि इस्लाम क़बूल करने के बा'द आप शैत़ानी अफ़्वाह सुनते ही बे धड़क नंगी तलवार ले कर बहादुराने अ़रब का नाम दुन्या से मिटाने चल पड़े। चुनान्चे,

इमाम अबू नुऐ़म अह़मद बिन **अ़ब्दुल्लाह** इस्फ़हानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (मु-तवफ़्फ़ा 430 हि.) **ह़िल्यतुल औलिया** में फ़रमाते हैं कि सब से पहले जिस शख़्स ने ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़िफ़ाज़त व ह़िमायत में तलवार उठाने की सआ़दत पाई वोह ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं।[1]

मुजाहिदीन के सरख़ील

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : **''مَنْ سَنَّ سُنَّةً حَسَنَةً فَعُمِلَ بِهَا كَانَ لَهُ أَجْرُهَا وَمِثْلُ أَجْرِ مَنْ عَمِلَ بِهَا، لَا يَنْقُصُ مِنْ أُجُورِهِمْ شَيْئًا''** या'नी जो कोई अच्छा त़रीक़ा ईजाद करे और उस पर अ़मल किया जाए तो अ़मल करने वालों को जिस क़दर अज्रो सवाब मिलेगा ईजाद करने वाले को भी उसी क़दर अज्र मिलेगा और अ़मल करने वालों के अज्रो सवाब में भी कोई कमी न होगी।[2]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब इ़श्क़े मुस्त़फ़ा से

---

[1] .....حلیۃ الاولیاء، الرقم ٦ الزبیر بن العوّام، الحدیث: ٢٨٠، ج ١، ص ١٣٢

[2] .....سنن ابن ماجہ، المقدمۃ، الحدیث: ٢٠٣، ج ١، ص ١٣٤

www.dawateislami.net

सरशार, सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फूफी सय्यि-दतुना सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पि-सरे होनहार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हि़फ़ाज़तो हि़मायत में तलवार उठाई तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह अ़मल इस क़दर पसन्द आया कि ता क़ियामे क़ियामत ए'लाए कलि-मतुल ह़क़ (दीने इस्लाम की सर बुलन्दी) के लिये तलवार उठाने वाले तमाम मुसल्मानों का अज्रो सवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नाम लिख दिया। चुनान्चे,

इमाम अबू जा'फ़र मुह़िब त़-बरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (मु-तवफ़्फ़ा 694 हि.) नक़्ल फ़रमाते हैं कि जब रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जज़्बए सर फ़रोशी से ख़ुश हो कर इन्हें अपनी चादर मुबारक अ़त़ा फ़रमाई तो उसी वक़्त ह़ज़रते जिब्राईले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام येह पैग़ाम ले कर ह़ाज़िरे ख़िदमत हुए : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सलाम भेजा है और इर्शाद फ़रमाया है कि ज़ुबैर को हमारी जानिब से सलामती का मुज़्दा दीजिये और येह ख़ुश ख़बरी भी दे दीजिये कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बि'सत से ले कर क़ियामत तक जो भी राहे ख़ुदा में जिहाद करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का सवाब मुजाहिदीन के अज्रो सवाब में कमी किये बिग़ैर इन्हें भी अ़त़ा फ़रमाएगा क्यूं कि इन्हों ने सब से पहले राहे ख़ुदा में तलवार निकाली है।[1]

---

[1] .....الریاض النضرۃ، الباب السادس الفصل السادس فی ذکر خصائصہ، ج ۲، ص ۲۷۴

www.dawateislami.net

जान दे दो वा'दए दीदार पर

नक़्द अपना दाम हो ही जाएगा

मह़ब्बत की कसोटी :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! लम्ह़ा भर के लिये ज़रा ग़ौर तो फ़रमाइये कि सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने आक़ा की मह़ब्बत में तलवार उठाई तो उन्हें इस का कितना बेहतरीन सिला मिला कि ता क़ियामत हर मुजाहिद के बराबर अज्रो सवाब ह़ासिल कर लिया और एक हम हैं कि उम्मती तो हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ही हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत का दम भी भरते हैं मगर क्या हम ने कभी ख़ुद को मह़ब्बत की कसोटी पर भी परखा है ? चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू **अ़ब्दुल्लाह** मुह़म्मद बिन सुलैमान जज़ूली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی (मु-तवफ़्फ़ा 16 रबीउ़ल अव्वल 870 सि.हि. ब मुत़ाबिक़ 1465 सि.ई.) ने **दलाइलुल ख़ैरात** शरीफ़ में शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत के ह़ुसूल के ह़वाले से बड़ी ही प्यारी रिवायत ज़िक्र फ़रमाई है जिस का मफ़्हूम येह है :

एक सह़ाबी ने शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं मोमिन कब बनूंगा ? और एक रिवायत में येह अल्फ़ाज़ हैं कि सच्चा मोमिन कब बनूंगा ? तो आप

www.dawateislami.net

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जब तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से महब्बत करने लगेगा। अ़र्ज़ की : मेरा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से महब्बत का तअ़ल्लुक़ कब उस्तुवार होगा ? इर्शाद फ़रमाया : जब तू उस के रसूल को (हर शै से) महबूब जानेगा। अ़र्ज़ की : महब्बते रसूल का ह़क़दार कैसे बना जा सकता है ? इर्शाद फ़रमाया : जब तू उन के त़रीक़े की पैरवी करे और उन की सुन्नतों को अपना ओढ़ना बिछोना बना लेगा, और तेरी महब्बत व नफ़रत और दोस्ती व दुश्मनी का महवर उन्ही की ज़ात से वाबस्ता हो जाएगा तो तू महब्बते रसूल का शरफ़ पा लेगा और याद रखना कि लोगों के ईमान व कुफ़्र में मक़ामो मर्तबा की पहचान का मे'यार येह है कि जिस क़दर वोह मुझे महबूब जानेंगे ईमान के नज़्दीक होंगे और जिस क़दर मुझ से बुग़्ज़ रखेंगे ईमान से दूर और कुफ़्र के नज़्दीक होंगे। ख़बरदार ! उस का ईमान नहीं जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब से प्यार नहीं।[1]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ज़रा ग़ौर फ़रमाइये ! और अपने अन्दर झांक कर देखिये कि हम महब्बत के किस मक़ाम पर फ़ाइज़ हैं। महब्बत का तक़ाज़ा तो येह है कि जो महबूब को पसन्द हो वोही अपनाया जाए और जो ना पसन्द हो उसे देखा भी न जाए मगर हम आ़शिक़े मुस्त़फ़ा होने का दा'वा करने के बा वुजूद सुन्नते मुस्त़फ़ा से कोसों दूर और फ़िरंगी तह्ज़ीब व सक़ाफ़त के नशे में चूर हैं। सुन्नतों पर अ़मल तो कुजा फ़राइज़ को भी फ़रामोश किये हुए हैं।

---

[1] .....دلائل الخیرات مترجم، فی فضائل الصلوۃ، ص۲۰۶

www.dawateislami.net

येह सब बुरी सोह़बत का नतीजा है कि इ़श्क़े मुस्त़फ़ा की शम्अ़ हमारे दिलों में मांद पड़ गई है। आइये ! तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर आ़शिक़ाने रसूल के साथ म-दनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर बन जाइये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से फ़राइज़ की पाबन्दी और सुन्नतों पर अ़मल करने का जज़्बा पैदा होने के साथ साथ इ़श्क़े मुस्त़फ़ा की शम्अ़ भी हमारे दिलों में फ़रोज़ां होगी।

तुम मकीने ला मकां हो और ह़क़ के राज़ दां हो
इ़ज़्ने रब से ग़ैब दां हो, क्या है जो तुम से निहां हो

یا نبی سلامٌ علیكَ یا رسول سلامٌ علیكَ
یا حبیب سلامٌ علیكَ صلوٰۃُ اللّٰہِ علیكَ

हुब्बे दुन्या से बचा लो, मुझ निकम्मे को निभा लो
दिल से शैत़ां को निकालो, अपना दीवाना बना लो

یا نبی سلامٌ علیكَ یا رسول سلامٌ علیكَ
یا حبیب سلامٌ علیكَ صلوٰۃُ اللّٰہِ علیكَ

दर्दे इ़स्यां को मिटाना, नेक मुझ को तुम बनाना
राहे सुन्नत पर चलाना, अपनी उ़ल्फ़त में गुमाना

یا نبی سلامٌ علیكَ یا رسول سلامٌ علیكَ
یا حبیب سلامٌ علیكَ صلوٰۃُ اللّٰہِ علیكَ

www.dawateislami.net

सल्तनत दो न ह़ुकूमत, दो न तुम दुन्या की दौलत
दो फ़क़त़ अपनी महब्बत, ऐ शहन्शाहे रिसालत
یا نبی سلامٌ علیكَ یا رسول سلامٌ علیكَ
یا حبیب سلامٌ علیكَ صلوٰۃُ اللّٰہِ علیكَ
ऐ शहन्शाहे मदीना, इ़श्क़ का दे दो ख़ज़ीना
हो मेरा सीना मदीना, अ़र्ज़ करता है कमीना
یا نبی سلامٌ علیكَ یا رسول سلامٌ علیكَ
یا حبیب سلامٌ علیكَ صلوٰۃُ اللّٰہِ علیكَ[1]
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इस्लाम व हिजरत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार उन दस जलीलुल क़द्र सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में होता है जिन को दुन्या ही में जन्नत की बिशारत दी गई और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन छ[6] सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में से भी एक हैं जिन्हें अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने बा'द ख़िलाफ़त के लिये नामज़द फ़रमाया था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस्लाम लाने की उ़म्र में इख़्तिलाफ़ है एक रिवायत में है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पन्दरह बरस की उ़म्र में और एक रिवायत के मुत़ाबिक़ अठ्ठारह बरस की उ़म्र में इस्लाम लाए इस त़रह़ बा'ज़ रिवायतें और भी हैं किसी में बारह साल की उ़म्र मिलती है तो किसी में सोलह

[1]..... वसाइले बख़्शिश, स. 572 ता 578

www.dawateislami.net

साल की उ़म्र का तज़्किरा है । बहर ह़ाल इस बात पर सब का इत्तिफ़ाक़ है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ साबिक़ीने अव्वलीन में से हैं और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने राहे ख़ुदा में दो मर्तबा हिजरत की । चुनान्चे,

कमसिन मुहाजिर :

मुश्रिकीने मक्का के ज़ुल्मो सितम जब ह़द से बढ़ गए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुसल्मानों को ह़बशा की त़रफ़ हिजरत का इज़्न दिया । जब कुफ़्फ़ारे मक्का के सताए हुए उन मुसल्मानों का क़ाफ़िला सूए ह़बशा रवाना हुवा तो उन में सब से कम उ़म्र मुहाजिर ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस मौक़अ़ पर भी बड़ी दिलेरी का मुज़ा-हरा किया । चुनान्चे,

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे स-लमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि ह़बशा हिजरत करने वाले तमाम मुसल्मान अम्नो आश्ती से रह रहे थे कि अचानक ह़बशा के एक शख़्स ने ह़ज़रते नज्जाशी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के ख़िलाफ़ अ़-लमे बग़ावत बुलन्द कर दिया जिस का उन्हें इस क़दर दुख हुवा कि इस से पहले कभी न हुवा था और उन्हें येह ख़ौफ़ दामन-गीर हुवा कि अगर वोह शख़्स ह़ज़रते नज्जाशी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पर ग़ालिब आ गया तो मुम्किन है कि मुसल्मानों की पासदारी न करे । चुनान्चे, जब ह़ज़रते नज्जाशी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ उस बाग़ी की सरकोबी के लिये रवाना हुए और दरियाए नील के दूसरे कनारे पर जहां उस बाग़ी

www.dawateislami.net

से आमना सामना होना मु-तवक़्क़ेअ़ था, जा ठहरे तो सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने आपस में मश्वरा किया कि दरिया की दूसरी जानिब जा कर किसी शख़्स को वहां के ह़ालात मा'लूम कर के आना चाहिये। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जो उस वक़्त तमाम मुहाजिरीन में सब से कम उ़म्र थे, ने ख़ुद को इस ख़िदमत के लिये पेश करते हुए अ़र्ज़ की : इस ख़िदमत की बजा आ-वरी की सआ़दत मुझे सोंपी जाए। तो सब उन की कम उ़म्री पर मु-तअ़ज्जिब हुए मगर उन के जज़्बे को सराहा और आख़िर कार आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इसरार पर उन्हें भेजने पर रिज़ा मन्द हो गए। ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ब ह़िफ़ाज़त दरिया के दूसरे कनारे तक तैर कर पहुंचाने के लिये येह तरकीब बनाई गई कि एक मश्कीज़े में हवा भरी गई और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस मश्कीज़े के ज़रीए़ तैर कर आसानी से दरिया के दूसरी त़रफ़ पहुंच गए और वापस इस ह़ाल में लौटे कि ख़ुशी से फूले न समा रहे थे और सब को येह ख़ुश ख़बरी दी कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते नज्जाशी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को फ़त्ह़ अ़त़ा फ़रमाई है। येह सुन कर सब इस क़दर ख़ुश हुए गोया इस से पहले कभी न हुए थे।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस कमसिन मुहाजिर की एक ख़ुसूसिय्यत येह भी है कि जब दूसरी बार हिजरत का हुक्म

---

[1] .....السیرۃ النبویۃ لابن ھشام، فرح المھاجرین بنصرۃ النجاشی علی عدوہ، ج ۱، ص ۳۱۵

www.dawateislami.net

हुवा और मुसल्मानों ने मक्कए मुकर्रमा को ख़ैरआबाद कह कर मदीनए मुनव्वरह की मुक़द्दस सर ज़मीन पर क़दम रखा तो सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सिवा कोई भी सह़ाबी अपने पूरे ख़ानदान के साथ हिजरत न कर सका बल्कि उन के अहले ख़ाना फ़र्दन फ़र्दन मदीनए मुनव्वरह पहुंचे। चुनान्चे, मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सिवा किसी सह़ाबी ने अपनी वालिदा के साथ हिजरत न की।[1]

शुजाअ़त व बहादुरी

इस्लाम लाने की वज्ह से जहां दीगर मुसल्मानों को बहुत सी तकालीफ़ का सामना था वहीं आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी मुश्रिकीने मक्का की शर अंगेज़ियों से मह़फ़ूज़ न रहे। हिजरत से क़ब्ल मुसल्मान जिस कर्बो तक्लीफ़ का शिकार थे इस का अन्दाज़ा कुफ़्र के ऐवानों में नेकी की दा'वत आ़म करने वालों को ही हो सकता है और उस वक़्त इस्लाम की इशाअ़तो तरवीज के लिये सब्रो तह़म्मुल जैसे औसाफ़ का ह़ामिल होना अज़ बस ज़रूरी था। लिहाज़ा इब्तिदाए इस्लाम में मुसल्मानों पर बहुत सख़्त आज़्माइशें आईं मगर उन्हों ने इन्तिहाई सब्र का मुज़ा-हरा किया और जब मदीनए मुनव्वरह में बा क़ाइ़दा एक इस्लामी रियासत का क़ियाम अ़मल में आया तो उस की ह़िफ़ाज़त के लिये उन्हों ने मैदाने कारज़ार में अपने ख़ून से शुजाअ़त की ऐसी दास्तानें लिखीं कि दुन्या आज तक ह़ैरान है।

---

[1] .....الوافی بالوفیات، الزبیر احد العشرۃ، ج ۱۴، ص ۱۲۲

www.dawateislami.net

ग़ज़्वए बद्र में कारनामा :

र-मज़ानुल मुबारक 2 सि.हि. में जब कुफ़्फ़ारे बद्र के मक़ाम पर तक़्रीबन एक हज़ार का लश्कर ले कर मुसल्मानों को ख़त्म करने के नापाक इरादे से सफ़ आरा हुए जब कि दीने इस्लाम के सिपाहियों की ता'दाद सिर्फ़ तीन सो तेरह थी । चुनान्चे,

फ़िरिश्तों के इ़मामे :

ह़ज़रते उ़बादा बिन ह़म्ज़ा बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि बद्र के दिन सय्यिदुना ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पीला इ़मामा शरीफ़ बांध रखा था और उस का शम्ला अपने मुंह पर डाले हुए थे, जब फ़िरिश्ते नाज़िल हुए तो हम ने देखा कि वोह भी अपने सरों पर पीले रंग के इ़मामे का ताज सजाए हुए हैं ।[1]

बा करामत बरछी :

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 346 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''**करामाते सह़ाबा**'' सफ़ह़ा 121 पर है : जंगे बद्र में सईद बिन अल आ़स का बेटा ''उ़बैदा'' सर से पाउं तक लोहे का लिबास पहने हुए कुफ़्फ़ार की सफ़ में से निकला और निहायत ही घमन्ड और ग़ुरूर से येह बोला कि ऐ मुसल्मानो ! सुन लो कि मैं ''अबू करिश'' हूं । उस की येह मग़रूराना ललकार सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जोशे जिहाद में भरे हुए मुक़ाबले के लिये

---

[1] .....المستدرک علی الصحیحین، کتاب معرفة الصحابة، الحدیث: ۵۶۰۸، ج ۴، ص ۴۳۸

www.dawateislami.net

अपनी सफ़ से निकले तो येह देखा कि उस की दोनों आंखों के सिवा उस के बदन का कोई ह़िस्सा ऐसा नहीं है जो लोहे में छुपा हुवा न हो। आप ने ताक कर उस की आंख में इस ज़ोर से बरछी मारी कि बरछी उस की आंख को छेदती हुई खोपड़ी की हड्डी में चुभ गई और वोह लड़-खड़ा कर ज़मीन पर गिरा और फ़ौरन ही मर गया। ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब उस की लाश पर पाउं रख कर पूरी त़ाक़त से बरछी को खींचा तो बड़ी मुश्किल से बरछी निकली लेकिन बरछी का सिरा मुड़ कर ख़म हो गया था। येह बरछी एक बा करामत यादगार बन कर बरसों तक तबर्रुक बनी रही। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से येह बरछी त़लब फ़रमा ली और उस को अपने पास रखा। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द ख़ु-लफ़ाए राशिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के पास यके बा'द दीगरे मुन्तक़िल होती रही और येह ह़ज़रात ए'ज़ाज़ो एह़तिराम के साथ उस बरछी की ख़ास ह़िफ़ाज़त फ़रमाते रहे। फिर ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़रज़न्द ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के पास आ गई यहां तक कि 73 सि.हि. में जब बनू उमय्या के ज़ालिम गवर्नर ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ स-क़फ़ी ने उन को शहीद कर दिया तो येह बरछी बनू उमय्या के क़ब्ज़े में चली गई। फिर इस के बा'द ला पता हो गई।[1]

---

[1].....صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب ۱۲، الحدیث: ۳۹۹۸، ج۳، ص۱۸ وحاشیۃ البخاری، کتاب المغازی، ج۲، ص۵۷۰ واسد الغابۃ، عبداللّٰہ بن الزبیر بن العوام، ج۳، ص۲۴۸، ۲۴۵

www.dawateislami.net

ग़ज़्वए उहुद में बहादुरी :

शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ग़ज़्वए उहुद (शव्वाल 3 सि.हि.) के मौक़अ़ पर एक काफ़िर को बढ़ चढ़ कर ह़म्ला करता मुला-ह़ज़ा फ़रमाया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उसे ठिकाने लगाने का हुक्म दिया। पस आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चीते की फ़ुरती से उस की त़रफ़ बढ़े और शेर की त़रह़ उस पर झपट पड़े, दोनों में ज़बर दस्त मा'रिका हुवा यहां तक कि लड़ते लड़ते दोनों ज़मीन पर गिर गए मगर ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कमाले फ़ुरती से उस के सीने पर सुवार हो कर उस का सर तन से जुदा कर दिया। रावी का बयान है कि वापसी पर सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का पुर तपाक इस्तिक़्बाल किया और उन की बे मिस्ल शुजाअ़त पर इन्आ़म में बोसे से नवाज़ा और ख़ुश हो कर फ़रमाया : ''मेरे चचा और मामूं सब तुम पर फ़िदा हों।''[1]

यहूदी पहलवानों का ग़ुरूर ख़ाक में मिल गया :

उसैर यहूदियों का इन्तिहाई त़ाक़त वर और मश्हूर पहलवान था, ग़ज़्वए ख़ैबर के मौक़अ़ पर त़ाक़त के नशे में चूर जब मैदाने कारज़ार में उतर कर चीख़ चीख़ कर शम्ए़ रिसालत के परवानों को दा'वते मुबा-रज़त देने लगा या'नी लड़ाई के लिये ह़रीफ़ त़लब

---

[1] ..... تاریخ مدینہ دمشق، باب زبیر بن عوام، ج۱۸، ص۳۵۹

www.dawateislami.net

करने लगा तो जां निसारी के जज़्बे से सरशार ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मस्लमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस दुश्मने इस्लाम का ग़ुरूर ख़ाक में मिलाने के लिये निकले और उसे जहन्नम की वादियों की सैर के लिये सफ़रे आख़िरत पर रवाना कर दिया। फिर यहूद के एक और नामी गिरामी त़ाक़त वर पहलवान ने मैदान में उतर कर दा'वते मुबा-रज़त दी, यहूदियों के उस पहलवान का नाम यासिर था, येह बड़ा ही माहिर नेज़ा बाज़ था जिस की शोहरत बड़ी दूर तक फैली हुई थी। इस की लाफ़ ज़नी (शैख़ी, ख़ुद सिताई) का मुंह बन्द करने के लिये जब शेरे ख़ुदा सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم मैदाने कारज़ार में क़दम रखने लगे तो ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : ''ऐ अ़ली ! मैं आप को क़सम देता हूं कि इस ना हन्जार का सर क़लम करने के लिये मैं ही काफ़ी हूं बस आप मुझे इजाज़त दें।''

पस ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बात मान ली। जब यासिर पहलवान अपने छोटे से नेज़े को हिलाता और लोगों को हंकाता ग़ुरूरो तकब्बुर से फुन्कारता आगे बढ़ा तो ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी उस का ग़ुरूरो नख़्वत से भरा सर पाउं तले कुचलने के लिये मैदाने कारज़ार की जानिब बढ़े। आप की वालिदए माजिदा ने जब येह देखा कि उन का लख़्ते जिगर हाथी नुमा यहूदी से नबरद आज़्मा होने के लिये बढ़ रहा है तो अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या मेरा बेटा इस मग़रूर यहूदी के हाथों जामे शहादत नोश करेगा ?

www.dawateislami.net

तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि इस की क्या मजाल जो आप के बेटे का बाल भी बीका कर सके, यक़ीनन आप का जिगर गोशा ही इस हाथी को जहन्नम रसीद करेगा। चुनान्चे, ह़क़्क़ो बात़िल के इस मा'रिके में ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कमाले शुजाअ़त व महारत से उस यहूदी को वासिले जहन्नम कर दिया। इस पर सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुश हो कर इर्शाद फ़रमाया : ''मेरे चचा मामूं तुम पर क़ुरबान।'' नीज़ फ़रमाया हर नबी का कोई न कोई ह़वारी (वफ़ादार दोस्त) होता है और ज़ुबैर मेरे ह़वारी और मेरे फूफी के बेटे हैं।[1]

एक रिवायत में है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब यासिर पहलवान को वासिले जहन्नम कर के लौटे तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कमाले मह़ब्बतो शफ़्क़त से आगे बढ़ कर आप को गले लगा लिया और दोनों आंखों के दरमियान बोसा दिया।[2]

सब से ज़ियादा बहादुर :

एक बार अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से एक शख़्स ने इस्तिफ़्सार किया : ''ऐ अबुल ह़सन! लोगों में सब से ज़ियादा बहादुर कौन है?'' तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

---

[1] .....کتاب المغازی للواقدی، باب غزوہ خیبر، ج ۲، ص ۶۵۷

[2] .....تاریخ مدینہ دمشق، باب زبیر بن عوام، ج ۱۸، ص ۳۸۱

www.dawateislami.net

की त़रफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया : ''वोह जो चीते की त़रह़ ग़ज़ब नाक और शेर की त़रह़ झपटने वाला है ।[1]

ज़ख़्मी जिस्म :

जंगे यरमूक (र-जबुल मुरज्जब 15 सि.हि.) में सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ की : आप आगे बढ़ कर ह़म्ला क्यूं नहीं करते ताकि हम भी आप के साथ मिल कर ह़म्ला करें ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर मैं ने ह़म्ला किया तो तुम मेरा साथ न दे सकोगे । पस ऐसा ही हुवा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दुश्मन पर ऐसा ह़म्ला किया कि एक सिरे से दाख़िल हुए तो सफ़ें चीरते हुए दूसरे सिरे से जा निकले । वापसी पर दुश्मनों ने आप के घोड़े की लगाम पकड़ ली और लड़ते हुए आप को कन्धों के दरमियान दो ज़ख़्म आए और एक ज़ख़्म पहले से मौजूद था जो कि ग़ज़्वए बद्र के मौक़अ़ पर आप को लगा था । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साह़िब ज़ादे ह़ज़रते उ़र्वह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि वोह ज़ख़्म इतने गहरे थे कि मैं बचपन में उन में अपनी उंगलियां डाल कर खेला करता था ।[2]

राहे ख़ुदा में ज़ख़्म :

ह़ज़रते ह़फ़्स बिन ख़ालिद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि मौसिल से एक बड़ी उ़म्र के बुज़ुर्ग हमारे पास तशरीफ़ लाए

---

[1] .....تاریخ مدینہ دمشق، باب زبیر بن عوام، ج ۱۸، ص ۳۸۵.....الوافی بالوفیات، الزبیر، ج ۱۴، ص ۱۲۲

[2] .....صحیح البخاری، کتاب المناقب، مناقب زبیر بن العوام، الحدیث: ۳۷۵۹، ج ۳، ص ۸

www.dawateislami.net

और उन्हों ने हमें बताया कि मैं एक सफ़र में ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ था। एक चट्यल मैदान में जहां दूर दूर तक पानी था न घास और न ही कोई इन्सान। ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को नहाने की ज़रूरत पेश आ गई तो उन्हों ने मुझ से फ़रमाया कि नहाने के लिये ज़रा पर्दे का इन्तिज़ाम कर दो। मैं ने उन के लिये पर्दे का इन्तिज़ाम किया, अचानक मेरी नज़र (दौराने ग़ुस्ल) उन के जिस्म पर पड़ गई तो क्या देखता हूं कि उन के सारे जिस्म पर तलवार के ज़ख़्मों के निशानात हैं, मैं ने उन से अ़र्ज़ की : मैं ने आप के जिस्म पर ज़ख़्मों के जितने निशानात देखे हैं किसी के जिस्म पर आज तक नहीं देखे। फ़रमाया : क्या आप ने देख लिये ? मैं ने हां में जवाब दिया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! एक एक ज़ख़्म **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बत में रहते हुए लगा है।"[1]

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان राहे ख़ुदा में कैसी कैसी तकालीफ़ बरदाश्त करते थे। ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरत के इस गोशे से हमें येह म-दनी फूल मिलता है कि म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करते हुए सामान चोरी होने या किसी चोट के लगने या मच्छरों के काटने के

---

[1] .....المستدرک علی الصحیحین، کتاب معرفۃ الصحابۃ، ذکر مناقب حواری رسول اللہ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم، الحدیث: ۵۶۰۴، ج ۴، ص ۴۳۷

www.dawateislami.net

सबब किसी आज़्माइश का सामना करना पड़े तो नफ़्सो शैत़ान के बहकावे में आ कर बे सब्री का मुज़ा-हरा कर के अपना सवाब ज़ाएअ़ न करें बल्कि अपना ज़ेह्न यूं बनाएं कि मेरी येह मुसीबत सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की राहे ख़ुदा की आज़्माइशों के मुक़ाबले में कुछ भी ह़ैसिय्यत नहीं रखती। यूं اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ सब्र कर के अज्र कमाना आसान हो जाएगा।

वाइज़े क़ौम की वोह पुख़्ता ख़याली न रही
बर्क़े त़ब्अ़ न रही शो'ला मक़ाली न रही
रह गई रस्मे अज़ां रूह़े बिलाली न रही
फ़ल्सफ़ा रह गया तल्क़ीने ग़ज़ाली न रही
मस्जिदें मरसिया ख़्वां हैं कि नमाज़ी न रहे
या 'नी वोह साह़िबे औसाफ़ ह़िजाज़ी न रहे

ख़ानदाने ज़ुबैर बिन अ़व्वाम

औलाद :

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुख़्तलिफ़ अवक़ात में कुल नव शादियां कीं मगर औलाद सिर्फ़ छ[6] अज़्वाज से है। चुनान्चे, (1) ह़ज़रते अस्मा बिन्ते अबी बक्र सिद्दीक़ से **अ़ब्दुल्लाह**.....उ़र्वह.....मुन्ज़िर.....आ़सिम.....मुहाजिर..... ख़दी-जतुल कुब्रा.....उम्मे ह़सन.....आ़इशा (2) बनी उमय्या की उम्मे ख़ालिद बिन्ते ख़ालिद बिन सईद बिन अल आ़स से

www.dawateislami.net

ख़ालिद.....अ़म्र.....ह़बीबा.....सौदह.....हिन्द। (3) बनी कल्ब की रबाब बिन्ते उनैफ़ से मुस्अ़ब.....ह़म्ज़ा.....रम्ला (4) बनी सा'लब की उम्मे जा'फ़र ज़ैनब बिन्ते मरसद से उ़बैदा.....जा'फ़र (5) उम्मे कुल्सूम बिन्ते उ़क़्बा बिन अबी मुईत़ से ज़ैनब (6) बनी असद की ह़लाल बिन्ते क़ैस बिन नौफ़ल से ख़दी-जतुस्सुग़रा رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ।[1]

हिजरत के बा'द पहले मौलूदे मस्ऊ़द :

हिजरते मदीना के बा'द मुसल्मान जब मुश्रिकीने मक्का की ईज़ा रसानियों से बच कर मदीना शरीफ़ पहुंचे तो यहां बसने वाले यहूदियों की रेशा दवानियों ने उन का इस्तिक़्बाल किया, जिन्हों ने येह प्रोपेगन्डा शुरूअ़ कर दिया कि हम ने मुसल्मानों की औ़रतों को जादू से बांझ कर दिया है अब इन के हां कोई बच्चा पैदा न होगा। बहुत से मुसल्मान इन की बेहूदा बातों से परेशान हो गए यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** की सूरत में एक फ़रज़न्दे अरजुमन्द अ़त़ा फ़रमाया और मुसल्मानों में मसर्रत की एक ऐसी लहर दौड़ गई कि उन्हों ने ख़ुश हो कर इस क़दर बुलन्द आवाज़ से **अल्लाहु अक्बर** का ना'रा लगाया कि दरो दीवार गूंज उठे और इस त़रह़ यहूदियों का त़िलिस्म टूट गया।[2] चुनान्चे,

---

[1] .....الطبقات الکبرٰی، الرقم: ۳۲، ج ۳ ص ۷۴

[2] .....البدایۃ والنہایۃ، فصل فی میلاد عبداللہ بن زبیر، ج ۲، ص ۲۲۷

www.dawateislami.net

मरवी है कि आंख खोलते ही इस्लाम की बहार देखने वालों में सब से पहले ख़ुश नसीब ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के शहज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं, इन की विलादत के बा'द इन्हें हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में लाया गया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक खजूर ले कर उसे द-हने मुबारक में रख कर नर्म किया और फिर उसे **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुंह में डाल दिया। पस येह वोह पहला मुस्लिम बच्चा है जिस के मुंह में सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का लुआ़बे मुबारक गया।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि नौ मौलूद को घुट्टी किसी नेक शख़्स से दिलाना चाहिये ताकि उ़म्र भर बच्चा उस की तासीर से फ़ैज़याब होता रहे।

म-दनी सोच :

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते कि ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने बेटों के नाम अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के नाम पर रखे ह़ालां कि वोह जानते थे कि ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द कोई नबी नहीं आ सकता और मैं ने अपने बेटों के नाम शु-हदाए किराम के नामों पर रखे इस उम्मीद पर कि इन शु-हदा की ब-र-कत से मेरे बेटों को भी येह अ-बदी व सर-मदी सआ़दत ह़ासिल हो। चुनान्चे,

---

[1] .....الریاض النضرۃ، الباب السادس فی ذکر مناقب الزبیر بن العوّام، الفصل العاشر فی ذکر ولدہ، ج۲، ص۲۹۱

www.dawateislami.net

❁.....**अ़ब्दुल्लाह** का नाम सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन जह़्श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नाम पर

❁.....**मुन्ज़िर** का ह़ज़रते मुन्ज़िर बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नाम पर

❁.....उ़र्वह का ह़ज़रते उ़र्वह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नाम पर

❁.....ह़म्ज़ा का **सय्यिदुश्शु-हदा** सय्यिदुना अमीरे ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नाम पर

❁.....जा'फ़र का ह़ज़रते जा'फ़र बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नाम पर

❁.....मुस्अ़ब का ह़ज़रते मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नाम पर

❁.....उ़बैदा का ह़ज़रते उ़बैदा बिन ह़ारिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नाम पर

❁.....ख़ालिद का ह़ज़रते ख़ालिद बिन सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नाम पर

❁.....अ़म्र का ह़ज़रते अ़म्र बिन सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नाम पर[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अकाबिरीन से इक्तिसाबे फ़ैज़ की म-दनी सोच फ़ी ज़माना हमें अमीरे अहले सुन्नत की ज़ात में बहुत नुमायां नज़र आती है । चुनान्चे, आप ने अपने बेटों का नाम

---

[1].....الطبقات الکبری، الرقم: ۳۲، ج ۳، ص ۷۴

www.dawateislami.net

सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अस्माए मुबा-रका की निस्बत से अह़मद और मुह़म्मद रखा, सियाल कोट शह़र को ज़िया कोट हुज़ूर सय्यिदी कुत़्बे मदीना ह़ज़रते मौलाना ज़ियाउद्दीन म-दनी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के नाम से मौसूम किया, फ़ैसलआबाद को सरदारआबाद मुह़द्दिसे आ'ज़म पाकिस्तान ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद सरदार अह़मद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ब-र-कतें समेटते हुए नाम दिया। नीज़ आप की तरबियत और इसी म-दनी सोच की ब-र-कतें हैं कि आज दा'वते इस्लामी की काबीनात के नाम ह़त्तल इम्कान बुज़ुर्गों से इक्तिसाबे फ़ैज़ की ख़ातिर उन के नाम से मौसूम हैं।

सह़ाबा का गदा हूं और अहले बैत का ख़ादिम
येह सब है आप ही की तो इनायत या रसूलल्लाह

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़मल से येह दर्स मिलता है कि एक मुसल्मान को तन मन धन और जान व माल व औलाद सब कुछ इस्लाम के नाम पर क़ुरबान कर देने का जज़्बा रखना चाहिये। येही वज्ह है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने जिगर गोशों के नाम शु-हदा के नामों पर रख कर गोया कि इस ख़्वाहिश का इज़्हार किया कि ऐ काश ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे बेटों को राहे ह़क़ में ख़ून बहाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए ताकि मेरे जिगर के येह टुकड़े जन्नत की सर-मदी ने'मतें पा कर अपने उख़्वी मुस्तक़्बिल को ताबनाक बना लें।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज हमारी सोच सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से किस क़दर मुख़्तलिफ़ हो चुकी है और इस में

www.dawateislami.net

इस क़दर तज़ाद ! आख़िर क्यूं ? हाए अफ़्सोस ! हम फ़िक्रे आख़िरत से भी किस क़दर ग़ाफ़िल हो चुके हैं कि बच्चों का दुन्यावी मुस्तक़्बिल संवारने के लिये बेटे की पैदाइश से पहले ही बा'ज़ लोग उस का नाम स्कूल में लिखवा देते हैं। अम्बिया व औलिया के नामों से ब-र-कत ह़ासिल करने के बजाए कुफ़्फ़ार जैसे नाम रखने में फ़ख़्र महसूस करते हैं। इस्लाम की ख़ातिर हमारा बेटा कुछ कारहाए नुमायां कर जाए येह सोच तो कुजा हम दा'वते इस्लामी के तीन रोज़ा म-दनी क़ाफ़िले या हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में भी उसे जाने की इजाज़त नहीं देते और बा'ज़ अवक़ात तो आंखें उस वक़्त खुलती हैं जब नौ जवान बेटा बुरी सोह़बत की नुहूसत से किसी डकैती वग़ैरा के जुर्म में जेल की सलाख़ों के पीछे पहुंच कर वालिदैन के ख़्वाबों को चक्ना चूर कर देता है और मुआ़-शरे में उन की इ़ज़्ज़त को ख़ाक में मिला देता है। ऐ काश ! औलाद के ह़क़ में हमारी कुढ़न भी वोही बन जाए जिस का इज़्हार अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ अपने इस शे'र में फ़रमाते हैं :

मेरी आने वाली नस्लें तेरे इ़श्क़ ही में मचलें
उन्हें नेक तू बनाना म-दनी मदीने वाले

फ़ज़ाइलो मनाक़िब

जन्नत की बिशारत

इमाम अबू ईसा तिरमिज़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 279 हि.) ने **तिरमिज़ी** शरीफ़ में एक रिवायत नक़्ल की है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने

www.dawateislami.net

इर्शाद फ़रमाया कि अबू बक्र, उ़मर, उ़स्मान, अ़ली, त़ल्ह़ा, ज़ुबैर, अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़, सा'द, सईद और अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ (رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) सब जन्नती हैं।[1]

दुन्या व आख़िरत के ह़वारी :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان जां निसारी व वफ़ा शिआ़री में अपनी मिसाल आप थे लेकिन बा'ज़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की इन्फ़िरादी ख़ुसूसिय्यात की वज्ह से उन्हें बारगाहे नुबुव्वत से मुख़्तलिफ़ ए'ज़ाज़ात भी मिले जिन पर बिला शुबा रश्क किया जाता है।

पस अगर येह पूछा जाए कि सिद्दीक़ कौन हैं ? तो हर एक की ज़बान पर एक ही नाम आएगा : अमीरुल मुअमिनीन सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और अगर येह सुवाल किया जाए कि फ़ारूक़ कौन हैं ? तो फ़ौरन अमीरुल मुअमिनीन सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम ज़बान पर आएगा और अगर कोई पूछे कि ज़ुन्नूरैन कौन हैं ? तो अमीरुल मुअमिनीन सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सिवा किसी का नाम नहीं लिया जाएगा और अगर येह सुवाल हो कि अबू तुराब, ह़ैदरे कर्रार और शेरे ख़ुदा कौन हैं ? तो अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के इ़लावा किसी और का नाम ज़बान पर नहीं आएगा। **इसी त़रह़** अगर कोई येह पूछ ले कि

---

[1] .....سنن الترمذی، کتاب المناقب، بالحدیث: ۳۷۶۸، ج۵، ص۴۱۶

www.dawateislami.net

ज़रा येह तो बताइये कि क्या ह़ज़रते ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ह़वारियों (जां निसार साथियों) की त़रह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के भी ह़वारी हैं ? तो बिला झिझक बता दीजिये कि हां ! हमारे मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ह़वारी भी हैं । चुनान्चे,

बुख़ारी शरीफ़ में ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : ''हर नबी के ह़वारी हैं और मेरे ह़वारी ज़ुबैर बिन अ़व्वाम हैं ।''[1]

एक रिवायत में है कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को जम्अ़ कर के इर्शाद फ़रमाया कि आज रात मैं ने तुम सब के जन्नत में मक़ाम व मर्तबे का मुशा-हदा किया । फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़, सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़, सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी, सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा, सय्यिदुना त़ल्ह़ा, सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम और सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم का जन्नत में मक़ामो मर्तबा बयान किया और ह़ज़रते त़ल्ह़ा व ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की त़रफ़ मु-तवज्जेह हो कर इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ त़ल्ह़ा व ज़ुबैर ! हर नबी के ह़वारी हैं और मेरे ह़वारी तुम दोनों हो ।''[2]

---

[1] ..... صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، مناقب الزبیر بن العوام، الحدیث: ۳۷۱۹، ج ۲، ص ۵۳۹

[2] ..... مسند البزار، مسند عبد اللہ بن ابی اوفی، الحدیث: ۳۳۴۳، ج ۸، ص ۲۷۸

www.dawateislami.net

जन्नती पड़ोसी :

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं कि मैं ने अपने कानों से शहन्शाहे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : ''त़ल्ह़ा और ज़ुबैर जन्नत में मेरे पड़ोसी होंगे।''[1]

नहीं ह़ुस्ने अ़मल कोई मेरे आ'माल नामे में
तेरी रह़मत मेरी बख़्शिश का सामां या रसूलल्लाह
पड़ोसी ख़ुल्द में बदकार को अपना बना लीजे
जहां हैं इ़तने एह़सां और एह़सां या रसूलल्लाह
मदीने में शहा अ़त्त़ार को दो गज़ ज़मीं दे दे
वहीं हो दफ़्न येह तेरा सना ख़्वां या रसूलल्लाह

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सलामे जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام :

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने छ[6] जलीलुल क़द्र सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان पर मुश्तमिल एक शूरा बनाई ताकि इन के बा'द मुसल्मान इन में से किसी एक पर मुत्तफ़िक़ हो कर उसे ख़लीफ़ा मुन्तख़ब कर लें। येह छ[6] सह़ाबए किराम ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी, ह़ज़रते अ़ली, ह़ज़रते त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह, ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास, ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ और ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अ़व्वाम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان

---

[1] .....سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب طلحہ، الحدیث: ۳۷۶۲، ج۵، ص۴۱۳

www.dawateislami.net

थे । जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मा'लूम हुवा कि बा'ज़ लोगों को सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की इस मजलिसे शूरा पर ए'तिराज़ है तो आप ने इन सब के फ़ज़ाइल बयान किये और ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मु-तअ़ल्लिक़ इर्शाद फ़रमाया कि मैं ने एक बार अपनी आंखों से देखा कि मह़बूबे रब्बे दावर, शफ़ीए रोज़े मह़शर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आराम फ़रमा रहे हैं और इस दौरान सब सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان भी महवे इस्तिराह़त हैं मगर ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास बैठे रहे ताकि कोई आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आराम में ख़लल न डाले । जब सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बेदार होने के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को पास बैठे हुए पाया तो फ़रमाया : ऐ अबू **अ़ब्दुल्लाह** ! तुम अभी तक यहीं हो ? अ़र्ज़ की : जी हां ! **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे मां बाप आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर क़ुरबान ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : येह जिब्रील हैं और तुम्हें सलाम कहते हैं और कहते हैं कि मैं क़ियामत के दिन तुम्हारे साथ रहूंगा यहां तक कि जहन्नम की चिंगारियों को तुम्हारे क़रीब तक न आने दूंगा ।[1]

सरकार का ''فِدَاكَ اَبِیْ وَاُمِّیْ'' फ़रमाना :

ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि

[1] .....تاریخ مدینۃ دمشق، ذکر من اسمہ الزبیر، ج۱۸، ص۳۹۴۔ مفہوماً

www.dawateislami.net

ग़ज़्वए अह़ज़ाब (8 शव्वाल या ज़ुल क़ा'दतिल ह़राम 5 सि.हि.) के मौक़अ़ पर मैं और ह़ज़रते उ़मर बिन अबी स-लमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ औ़रतों की ह़िफ़ाज़त पर मामूर थे, अचानक मैं ने अपने वालिदे माजिद ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दो या तीन मर्तबा बनू क़ुरैज़ा की त़रफ़ आते जाते देखा। वापसी पर मैं ने इस का सबब पूछा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ऐ मेरे बेटे ! क्या वाक़ेई तुम ने मुझे देखा था ? मैं ने अ़र्ज़ की : जी हां ! तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बताया कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया था कि बनी क़ुरैज़ा की ख़बरें कौन लाएगा ? पस मैं ने येह ख़िदमत सर अन्जाम दी और जब वापस बारगाहे नुबुव्वत में ह़ाज़िर हुवा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे लिये अपने वालिदैने करीमैन को जम्अ़ करते हुए इर्शाद फ़रमाया : فِدَاكَ اَبِیْ وَاُمِّی। या'नी ऐ ज़ुबैर तुम पर मेरे मां बाप क़ुरबान।[1]

दीन का सुतून :

एक बार अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया कि अगर मैं किसी से कोई अ़ह्द करता या अपने बा'द मालो अस्बाब छोड़ता तो ज़ुबैर बिन अ़व्वाम को उन का ह़क़दार बनाना पसन्द करता क्यूं कि वोह दीन का एक सुतून हैं।[2]

---

[1] .....صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، مناقب الزبیر بن العوّام، الحدیث: ۳۷۲۰، ج ۲، ص ۵۳۹

[2] .....المعجم الکبیر، الحدیث: ۲۳۲، ج ۱، ص ۱۲۰

www.dawateislami.net

करीमुन्नास :

ह़ज़रते अबू इस्ह़ाक़ सबीई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि मैं ने एक मजलिस में मौजूद बीस से ज़ाइद सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से पूछा कि सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में करीमुन्नास (लोगों में सब से ज़ियादा मुअ़ज़्ज़ज़) कौन था ? तो सब ने येही जवाब दिया कि बारगाहे नुबुव्वत में ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم सब से मुअ़ज़्ज़ज़ थे ।[1]

दियानत दारी :

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी, सय्यिदुना मिक़्दाद, सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ और सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने मस्ऊ़द समेत दीगर सात जलीलुल क़द्र सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अमानत व दियानत के सबब इन्हें अपने बा'द अपने माल का वाली मुक़र्रर किया । पस ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बड़ी दियानत दारी के साथ उन के मालों की ह़िफ़ाज़त फ़रमाते और उन की औलाद पर अपनी कमाई से ख़र्च किया करते ।[2]

---

[1] .....الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، الرقم ۸۱۱ زبیر بن العوام، ج ۲، ص ۹۲

[2] .....: تاریخ مدینہ دمشق، حضرت زبیر بن عوام، ج ۱۸، ص ۳۹۷

www.dawateislami.net

काम्याब ताजिर :

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इन्तिहाई काम्याब ताजिर थे, एक बार इन से काम्याब ताजिर होने का राज़ पूछा गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मैं ने कभी बिन देखे कोई चीज़ न ख़रीदी और कम नफ़्अ़ को कभी रद न किया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिसे चाहे ब-र-कत से नवाज़ देता है ।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस में हमारे उन भाइयों के लिये नसीह़त है जो हर वक़्त ज़ियादा से ज़ियादा नफ़्अ़ के हुसूल की तलाश में रहते हैं और यूं बे जा नफ़्अ़ ह़ासिल करने की कोशिश में मुसल्मानों के लिये मज़ीद परेशानी और अपने लिये बे ब-र-कती का सामान करते हैं ।

स-दक़ा व ख़ैरात :

मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के एक हज़ार ग़ुलाम थे जो आप को ज़मीन की पैदावार और फ़िद्या वग़ैरा दिया करते थे लेकिन उस में से एक दिरहम भी आप के घर में दाख़िल न होता बल्कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तमाम का तमाम माल स-दक़ा कर दिया करते थे ।[2]

---

[1] .....الاستیعاب، باب ۱۱۸، ج ۲، ص ۹۲

[2] .....عمدۃ القاری کتاب الخمس، باب برکۃ الغازی، ج ۱۰، ص ۲۶۴

www.dawateislami.net

एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपना एक घर छ[6] लाख में फ़रोख़्त किया तो आप से अ़र्ज़ की गई : "ऐ अबू **अ़ब्दुल्लाह** ! आप को तो नुक़्सान हो गया।" तो आप ने इर्शाद फ़रमाया : हरगिज़ नहीं, ख़ुदा की क़सम ! तुम जान लोगे कि मैं ने नुक़्सान नहीं उठाया क्यूं कि मैं ने येह माल राहे ख़ुदा में दे दिया है।[1]

फ़त्ह़े मक्का के मौक़अ़ पर मै-सरह के सालार :

र-मज़ानुल मुबारक 8 सि.हि. में फ़त्ह़े मक्कए मुकर्रमा के मौक़अ़ पर ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लश्करे इस्लाम के मै-सरह (फ़ौज के बाएं बाज़ू) के सालार थे और ह़ज़रते मिक़्दाद बिन अस्वद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मै-मनह (फ़ौज के दाएं बाज़ू) के सालार थे।[2]

ग़ज़्वए बद्र के शह सुवार :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ज़्वए बद्र के मौक़अ़ पर मुसल्मानों के पास सिर्फ़ दो घोड़े थे और उन में से एक घोड़े पर ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सुवार थे।[3]

---

[1] .....المرجع السابق، ص ۴۶۴

[2] .....الطبقات الکبری لابن سعد، الرقم ۳۲ الزبیر بن العوام، ج ۳، ص ۷۷

[3] ..... المصنف لابن ابی شیبہ، کتاب الفضائل، باب ماحفظت فی الزبیر بن العوام، الحدیث: ۱۰، ج ۷، ص ۵۱۱

www.dawateislami.net

माले ग़नीमत में ह़िस्सा :

ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये (माले ग़नीमत से) चार ह़िस्से मुक़र्रर थे, दो आप के घोड़े के सबब, एक बज़ाते ख़ुद जिहाद में शिर्कत करने और चौथा क़राबत दारी या'नी हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फूफीज़ाद होने की वज्ह से मिलता था।[1]

सरकार के बुलावे पर लब्बैक कहने वाले :

क़ुरआने पाक में है :

اَلَّذِیْنَ اسْتَجَابُوْا لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ مِنْۢ بَعْدِ مَاۤ اَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ۚ لِلَّذِیْنَ اَحْسَنُوْا مِنْهُمْ وَاتَّقَوْا اَجْرٌ عَظِیْمٌ ﴿۱۷۲﴾ (پ۴، اٰل عمران: ۱۷۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो **अल्लाह** व रसूल के बुलाने पर ह़ाज़िर हुए बा'द इस के कि उन्हें ज़ख़्म पहुंच चुका था इन के निकोकारों और परहेज़ गारों के लिये बड़ा सवाब है।

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अपने भान्जे ह़ज़रते उ़र्वह से इस आयते मुबा-रका का शाने नुज़ूल बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाया : ऐ मेरे भान्जे ! तुम्हारे नानाजान या'नी ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ और तुम्हारे वालिद ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अ़व्वाम भी इन लोगों में से हैं।

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

---

[1] .....تاریخ مدینہ دمشق، زبیر بن عوام، ج۱۸، ص۳۸۴

www.dawateislami.net

को जब ग़ज़्वए उहुद में मुश्रिकीन की जानिब से सख़्त सदमा उठाना पड़ा तो येह ख़दशा लाहिक़ हुवा कि कहीं वोह दोबारा ह़म्ला न कर दें। चुनान्चे, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''कौन है जो मुश्रिकीन के ह़ालात मा'लूम कर के आएगा ?'' तो इस मौक़अ़ पर जिन सत्तर सह़ाबए किराम ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रमान पर लब्बैक कहते हुए ख़ुद को इस ख़िदमत के लिये पेश किया उन में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी थे।[1]

इख़्लास की गवाही :

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا **सूरए ब-क़रह** की आयते मुबा-रका ﴿وَ مِنَ النَّاسِ مَنْ یَّشْرِیْ نَفْسَهُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ؕ وَ اللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ﴾ (پ۲، البقرہ:۲۰۷)[2] का शाने नुज़ूल बयान करते हुए फ़रमाते हैं : येह आयते मुबा-रका ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़क़ में नाज़िल हुई, जब कुफ़्फ़ार ह़ज़रते ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को तख़्ताए दार पर लटकाने के लिये निकले तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कुफ़्फ़ार से फ़रमाया : ''मुझे दो रक्अ़त नमाज़ की मोहलत दे दो।'' मोहलत मिलने पर इन्तिहाई ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ के साथ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने

---

[1] ..... صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب الذین استجابوا للہ، الحدیث:۴۰۷۷، ج۳، ص۴۳

[2] ..... **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और कोई आदमी अपनी जान बेचता है **अल्लाह** की मरज़ी चाहने में और **अल्लाह** बन्दों पर मेह्रबान है।

www.dawateislami.net

नमाज़ अदा की, सलाम फैरने के बा'द इर्शाद फ़रमाया : "दिल तो चाह रहा था ज़िन्दगी की आख़िरी नमाज़ को मज़ीद त़वील कर दूं लेकिन इस लिये जल्द ख़त्म कर दी कहीं तुम येह न समझो कि मौत के डर से त़वालत से काम ले रहा है।" फिर कुफ़्फ़ार से फ़रमाया :

وَ لَسْتُ أُبَالِي حِيْنَ أُقْتَلُ مُسْلِماً

عَلٰى أَيِّ جَنْبٍ كَانَ فِي اللهِ مَصْرَعِي

या'नी मेरा ख़ातिमा इस्लाम पर हो रहा है मुझे अब कोई परवाह नहीं कि मैं किस सम्त दार पर लटकाया जाऊं क्यूं कि जिस पहलू पर भी मेरी जान जाने आफ़रीन के सिपुर्द होगी इस का शुमार ख़ुदाए वह़्-दहू ला शरीक के मानने वालों में ही होगा।

फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बे क़रार हो कर अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे मौला ! तू जानता है कि यहां मेरा कोई रफ़ीक़ नहीं जो तेरे मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तक मेरा सलाम पहुंचा सके पस तू ख़ुद ही मेरा सलाम पहुंचा देना।"

ऐ सबा मुस्त़फ़ा से कह देना ग़म के मारे सलाम कहते हैं
याद करते हैं तुम को शामो सह़र ग़म के मारे सलाम कहते हैं

और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने क्या ख़ूब कहा है :

मैं जो यूं मदीने जाता तो कुछ और बात होती
कभी लौट कर न आता तो कुछ और बात होती
ब ज़बाने ज़ाइ़रीं तो मैं सलाम भेजता हूं
कभी ख़ुद सलाम लाता तो कुछ और बात होती

www.dawateislami.net

मेरी आंख जब भी खुलती तेरी रह़मतों से आक़ा
तुझे सामने ही पाता तो कुछ और बात होती
क्यूं मदीना छोड़ आया तुझे क्या हुवा था अ़त्तार
वहीं घर अगर बसाता तो कुछ और बात होती

इसी दौरान कुफ़्फ़ार ने नेज़ों के पै दर पै वार कर के आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद कर दिया। उधर आ़शिक़ की सच्ची तड़प काम आई और सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इन की ह़ालते ज़ार की ख़बर हो गई।

फ़रियाद उम्मती जो करे ह़ाले ज़ार में
मुम्किन नहीं कि ख़ैरे बशर को ख़बर न हो

पस आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो कोई ख़ुबैब का ज-सदे ख़ाकी सूली से उतार कर लाएगा उस के लिये जन्नत है।" ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम ने सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दिले बे क़रार की इस पुकार पर फ़ौरन लब्बैक कहते हुए अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं और मेरे साथी ह़ज़रते मिक़्दाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस सआ़दत के लिये ह़ाज़िर हैं।" जब मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के येह दोनों सफ़ीर दिन रात सफ़र करते हुए उस मक़ाम पर पहुंचे तो क्या देखते हैं कि कुफ़्फ़ारे बद अत्वार ने तख़्ताए दार के गिर्द चालीस नियाम बरदार पहरेदार खड़े कर रखे थे और ह़ज़रते ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ज-सदे आ़ली चालीस दिन गुज़रने के बा'द भी बिल्कुल तरो ताज़ा था।

www.dawateislami.net

जबीं मैली नहीं होती दहन मैला नहीं होता

ग़ुलामाने मुह़म्मद का कफ़न मैला नहीं होता

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बड़ी होशियारी से आ़शिक़े मुस्त़फ़ा के लाशए मुबारक को घोड़े पर रखा और चल पड़े मगर इसी अस्ना में सत्तर कुफ़्फ़ारे ना हन्जार ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को घेर लिया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जैसे ही मजबूरन ज-सदे ख़ाकी को ज़मीन पर रखा तो आ़शिक़ के फ़िराक़ में पहले से बेताब ज़मीन ने लाश को हमेशा के लिये अपनी आग़ोश में ले लिया येही वज्ह है कि ह़ज़रते ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को **بَلِیْعُ الْاَرْض** के लक़ब से याद किया जाता है।

पस ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कुफ़्फ़ार की त़रफ़ मु-तवज्जेह हुए और फ़रमाया : ''ऐ गुरौहे क़ुरैश ! तुम्हें हमारे ख़िलाफ़ तलवार उठाने की जुर्अत कैसे हुई ? फिर अपना इमामा सर से उतार कर फ़रमाने लगे : मुझे पहचानो ! मैं ज़ुबैर बिन अ़व्वाम हूं, मेरी वालिदा हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फूफी ह़ज़रते सफ़िय्या हैं और मेरे रफ़ीक़ मिक़्दाद अस्वद हैं। हम दोनों अपने शिकार को पल भर में दबोचने वाले शेर हैं, अब तुम्हारी मरज़ी चाहो तो लड़ लो और चाहो तो हमारा रास्ता छोड़ कर वापस अपनी राह को पलट जाओ। कुफ़्फ़ार ने दोनों का रास्ता छोड़ कर पीछे हटने में ही आ़फ़िय्यत जानी। जब येह दोनों बारगाहे मुस्त़फ़ा में ह़ाज़िर हुए तो ह़ज़रते जिब्राईले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام ने ह़ाज़िरे ख़िदमते अक़्दस हो कर इन दोनों के ह़क़ में येह बिशारते उ़ज़्मा सुनाई : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आज तो फ़िरिश्ते

www.dawateislami.net

भी आप के इन दो साथियों पर फ़ख़्र कर रहे हैं और साथ ही येह आयते मुबा-रका :

وَ مِنَ النَّاسِ مَنْ یَّشْرِیْ نَفْسَهُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ؕ (پ۲،البقرہ:۲۰۷)[1]

तिलावत की ।[2]

अल्लाह अल्लाह ! सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का जज़्बए इ़श्क़े मुस्त़फ़ा मरह़बा सद करोड़ मरह़बा ! आख़िरी सांसें हैं मगर बजाए अहलो इ़याल या मालो मताअ़ के फ़क़त ख़्वाहिश की तो किस की सिर्फ़ दो रक्अ़त नमाज़ की ।

येह इक जान क्या है अगर हों करोड़ों

तेरे नाम पर सब को वारा करूं मैं

ऐ काश ! हमें सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के इ़श्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का करोड़वें ह़िस्से का जुज़ ही मिल जाए, वोह तलवारों के साए में, तख़्ताए दार सामने होने के बा वुजूद इ़श्क़े मुस्त़फ़ा और फ़िराक़े मुज्तबा में बे क़रार हो रहे हैं, मौत का भी कोई डर नहीं और एक हम हैं कि नोके ज़बान तक तो आ़शिक़ हैं मगर ह़ाल येह है कि मह़ब्बते रसूल में ज़ुल्फ़ें रखना तो दर कनार, दाढ़ी शरीफ़ को अपने हाथों से काट कर गन्दी नालियों में बहा देते हैं । नमाज़ हमारे आक़ा की आंखों की ठन्डक है और हम हैं कि मह़ब्बते रसूल में तहज्जुद तो दर कनार नमाज़े फ़ज्र में भी उठा

[1].....**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और कोई आदमी अपनी जान बेचता है **अल्लाह** की मरज़ी चाहने में और **अल्लाह** बन्दों पर मेहरबान है।

[2].....الریاض النضرۃ، الباب السادس فی ذکر مناقب الزبیر بن العوّام، الفصل السادس فی خصائصہ، ج۲، ص۲۷۹

www.dawateislami.net

नहीं जाता । काश ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सह़बए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के सदक़े हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना दे ।

मेरी आने वाली नस्लें तेरे इ़श्क़ ही में मचलें
उन्हें नेक तू बनाना म-दनी मदीने वाले

सय्यिदुना ज़ुन्नूरैन की गवाही :

एक साल अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को म-रज़े नक्सीर का आ़रिज़ा लाह़िक़ हुवा जो इस क़दर शिद्दत पकड़ गया कि ह़ज की अदाएगी में भी रुकावट बन गया और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी बिगड़ती हुई सिह़्ह़त को भांपते हुए अपनी वसिय्यत भी तह़रीर फ़रमा दी । इसी दौरान क़ुरैश का एक शख़्स ह़ाज़िरे ख़िदमत हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : ''आ़लीजाह ! अपने बा'द किसी को ख़लीफ़ा नामज़द कर दीजिये ।'' इस पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''क्या येह फ़क़त तुम्हारी राय है या क़ौम का मुत़ा-लबा है ?'' अ़र्ज़ की : ''क़ौम का मुत़ा-लबा है ।'' तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : ''तुम्हारी राय में कौन मन्सबे ख़िलाफ़त के लाइक़ है ?'' इस पर उस ने कोई जवाब न दिया । कुछ देर में ह़ज़रते ह़ारिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी ह़ाज़िरे ख़िदमत हो कर क़ौम का येही मुत़ा-लबा दोहराया तो ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : ''किस को बनाऊं ?'' जवाब में ह़ज़रते ह़ारिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी ख़ामोश रहे तो अमीरुल मुअमिनीन ने ख़ुद ही इर्शाद फ़रमाया कि क़ौम की राय शायद ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़क़ में होगी । इस पर ह़ज़रते ह़ारिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस की तस्दीक़ करते हुए अ़र्ज़ की :

www.dawateislami.net

''बिल्कुल क़ौम की राय इन्ही के ह़क़ में है।'' तो ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़ज़ाइल बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाया : ''क़सम उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! जहां तक मुझे इ़ल्म है वोह क़ौम के बेहतरीन आदमी हैं और **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को उन के साथ बहुत मह़ब्बत थी।''[1]

जिन्नात के वफ़्द से मुलाक़ात :

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें मस्जिदे न-बवी शरीफ़ में नमाज़ पढ़ाई, फिर हमारी जानिब मु-तवज्जेह हो कर इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''तुम में से कौन आज रात जिन्नात के वफ़्द से मुलाक़ात के लिये मेरे साथ चलेगा ?'' सब ही ख़ामोश रहे किसी ने जवाब न दिया, यहां तक कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येही सुवाल तीन बार दोहराया मगर कोई जवाब न मिला तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे पास से गुज़रते हुए मेरा हाथ पकड़ा और अपने दामने रह़मत में ले कर चलने लगे, त़वील सफ़र तै़ करने के बा वुजूद सरे राह कुछ मह़सूस न हुवा, हम इस क़दर दूर पहुंच गए कि मदीने के बाग़ात पीछे रह गए और मक़ामे बवार आ गया।

अचानक वहां कुछ लोग नज़र आए जो नेज़े की मानिन्द दराज़ क़द और पाउं तक लम्बे कपड़े पहने हुए थे, उन्हें देखते ही

[1] .....صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النّبی، مناقب زبیر بن العوام، الحدیث: ۳۷۱۷، ج ۲، ص ۵۳۹

www.dawateislami.net

मुझ पर हैबत त़ारी हो गई यहां तक कि मेरे क़दम ख़ौफ़ के मारे लरज़ने लगे। फिर जब हम उन के मज़ीद क़रीब पहुंचे तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने मुबारक पाउं के ज़रीए़ ज़मीन पर एक गोल दाएरा खींच कर मुझ से इर्शाद फ़रमाया : ''इस के दरमियान बैठ जाओ।'' जैसे ही में दरमियान में बैठा सारा ख़ौफ़ जाता रहा, नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मज़ीद आगे तशरीफ़ ले गए और जिन्नात पर क़ुरआने करीम की तिलावत पेश की और सुब्ह़ नुमूदार होने के वक़्त वापस मेरे पास तशरीफ़ लाए और मुझे साथ चलने को फ़रमाया, मैं साथ साथ चलने लगा, इसी दौरान हम बिल्कुल अजनबी जगह पहुंच गए तो वहां सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : ''ग़ौर करो और देखो तुम्हें पहले नज़र आने वाली चीज़ों में से क्या नज़र आ रहा है?'' मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** मैं बहुत बड़ी एक जमाअ़त देख रहा हूं। सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने दस्ते अक़्दस से ज़मीन को नर्म फ़रमा कर कुछ ले कर उन की त़रफ़ फेंका और फिर इर्शाद फ़रमाया : ''येह क़ौमे जिन्नात का एक वफ़्द था जो राहे रास्त पर आ गया।''[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! पता चला कि सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की निगाहे फ़ैज़ से हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आंखों ने वोह कुछ देखा जो दूसरों को नज़र न आता था।

[1] .....الریاض النضرۃ، الفص السادس، باب ذکر اختصاصہ بمرافق النّبی صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم الی وفدالجن، ج۲، ص۲۷۸

www.dawateislami.net

सरे अ़र्श पर है तेरी गुज़र दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र
म-लकूतो मुल्क में कोई शै नहीं वोह जो तुझ पे इ़यां नहीं [1]

ख़ौफ़े ख़ुदा

बयाने ह़दीस में एह़तियात़ :

ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि मैं ने सय्यिदुना ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ की : आप अह़ादीसे मुबा-रका क्यूं नहीं बयान करते जैसा कि दूसरे सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان करते हैं ? तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाब दिया : ख़ुदा की क़सम ! मैं जब से इस्लाम लाया हूं हमेशा सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ रहा हूं मगर (अह़ादीसे मुबा-रका बयान न करने की वज्ह येह है कि) मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना है : ''जो कोई जानबूझ कर मुझ पर झूट बांधे तो उसे चाहिये कि अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।''[2]

ह़ाफ़िज़ इब्ने अ़साकिर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ **तारीख़े मदीना दिमश्क़** अल मा'रूफ़ **तारीख़ इब्ने अ़साकिर** में फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बयाने ह़दीस में अपनी ज़ात पर इस बात का कोई डर न था कि वोह जान बूझ कर इस में झूट की कोई आमेज़िश करेंगे, अलबत्ता ! ग़-लती व ख़ता की वज्ह से तह़रीफ़ व इज़ाफ़ा होने के अन्देशे के सबब उस वक़्त तक आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़दीसे पाक बयान न फ़रमाते जब तक उस का यक़ीनी त़ौर पर फ़रमाने रसूल होना साबित न हो जाता।[3]

---

[1]..... ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 66

[2]..... المستدرک، کتاب معرفة الصحابة، رجوع الزبیر عن معرکة الجمل، الحدیث: ۵۶۲۸، ج۴، ص۴۴۵

[3]..... تاریخ مدینہ دمشق، زبیر بن عوام، ج۱۸، ص۳۳۷

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि किसी क़ौल को फ़क़त़ शक या ग़ालिब ज़न होने की बिना पर बत़ौरे ह़दीस बयान करना जाइज़ नहीं जब तक कि येह कामिल यक़ीन न हो जाए कि क़ौल ह़दीसे पाक ही है।

आप से मरवी ह़दीसे मुबा-रका :

शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : हर सुब्ह़ एक मुनादी (पुकारने वाला) आवाज़ देता है (उ़यूब से पाक) बादशाह (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) की पाकीज़गी बयान करो।[1]

''अ़-श-रए मुबश्शरह'' की निस्बत से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दस फ़ज़ाइल

(1).....सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : हर नबी का कोई न कोई ह़वारी होता है और ज़ुबैर मेरे ह़वारी और मेरे फूफी के बेटे हैं।[2]

(2).....सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ ज़ुबैर ! येह जिब्रील हैं और तुम्हें सलाम कहते हैं और कहते हैं कि मैं क़ियामत के दिन तुम्हारे साथ रहूंगा यहां तक कि चिंगारियों को तुम्हारे क़रीब न आने दूंगा।[3]

---

[1] ..... سنن الترمذی، کتاب الدعوات، فی دعاء النبی صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم وتعوذہ-الخ الحدیث: ۳۵۸۰، ج۵، ص ۳۳۱

[2] ..... تاریخ مدینہ دمشق، ذکر من اسمہ الزبیر بن العوام، ج ۱۸، ص ۳۷۰

[3] ..... المرجع السابق، ص ۳۹۴، مفہوماً

www.dawateislami.net

(3).....यहूदी पहलवान मरह़ब के भाई यासिर को वासिले जहन्नम करने पर मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कमाले मह़ब्बत व शफ़्क़त से आप के इस्तिक़्बाल के लिये खड़े हुए और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को गले लगा कर दोनों आंखों के दरमियान बोसा दिया और इर्शाद फ़रमाया : ''मेरे चचा और मामूं तुम पर क़ुरबान।''[1]

(4).....ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते ज़ुबैर इस्लाम के सुतूनों में से एक सुतून हैं।[2]

(5).....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''त़ल्ह़ा और ज़ुबैर जन्नत में मेरे पड़ोसी होंगे।''[3]

(6).....उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا इर्शाद फ़रमाती हैं : ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अ़व्वाम उन लोगों में से हैं जिन के मु-तअ़ल्लिक़ क़ुरआने पाक में है कि येह वोह लोग हैं जिन्हों ने बा वुजूद ज़ख़्मी होने के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म पर लब्बैक कहा।[4]

(7).....बद्र के दिन फ़िरिश्ते ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रह़ पीले रंग के इमामे शरीफ़ का ताज सजा कर नाज़िल हुए।[5]

---

[1] .....تاریخ مدینہ دمشق، ذکر من اسمہ الزبیر بن العوام، ج ۱۸، ص ۳۸۱

[2] .....الریاض النضرۃ، الباب السادس الفصل الثامن فی ذکر شہادۃ عمر، ج ۲، ص ۲۸۲

[3] .....تاریخ مدینہ دمشق، ذکر من اسمہ الزبیر بن العوام، ج ۱۸، ص ۳۹۱

[4] .....المرجع السابق، ص ۳۵۸

[5] .....المستدرک علی الصحیحین، کتاب معرفۃ الصحابۃ، ذکر مناقب حواری رسول اللہ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم، الحدیث ۵۶۰۸، ج ۴، ص ۴۳۸

www.dawateislami.net

(8).....अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! जहां तक मुझे इ़ल्म है ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़ौम में सब से बेहतरीन शख़्स हैं और **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इन से बहुत मह़ब्बत थी ।[1]

(9).....ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये अपने वालिदैने करीमैन को जम्अ़ फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया : فِدَاکَ اَبِیْ وَاُمِّی या'नी ऐ ज़ुबैर ! तुम पर मेरे मां बाप क़ुरबान ।[2]

(10).....सब से पहले जिस शख़्स ने हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़िफ़ाज़तो ह़िमायत में तलवार उठाने की सआ़दत पाई वोह ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं ।[3]

मीठे मीठे इस्लमी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जन्नती होने की ज़मानत पाने के बा वुजूद सारी ज़िन्दगी रिज़ाए रब्बुल अनाम के ह़ुसूल में बसर की, दीने इस्लाम की ख़ातिर ऐसी क़ुरबानियां दीं जो ता क़ियामत मुसल्मानों

---

[1] .....صحیح البخاری، کتاب المناقب، مناقب زبیر بن العوام، الحدیث: ۳۷۱۷، ج ۲ ص ۵۳۹

[2] .....المرجع السابق، الحدیث: ۳۷۲۰، ص ۵۲۰

[3] ..... حلیۃ الاولیاء، الرقم ٦ الزبیر بن العوّام، الحدیث: ۲۸۰، ج ۱، ص ۱۳۲

www.dawateislami.net

के लिये नमूना हैं बल्कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तो अपनी जान ही इस्लाम पर क़ुरबान कर दी और शहादत के अ़ज़ीमुश्शान मर्तबे पर फ़ाइज़ हुए। चुनान्चे

शहादत :

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब जंगे जमल छोड़ कर वापस जा रहे थे, तो इब्ने जरमूज़ ने तआ़क़ुब कर के आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को धोके से शहीद कर दिया। येह जंग बरोज़ जुमा'रात 11 जुमादल उख़्रा 36 सि.हि. में हुई।[1]

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मज़ारे मुबारक इ़राक़ की सर ज़मीन पर जिस शह्र में वाक़ेअ़ है उस का नाम ही **मदीनतुज़्ज़ुबैर** है।

क़ातिल को जहन्नम की ख़बर :

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़ातिल इब्ने जरमूज़ ने अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم की ख़िदमत में ह़ाज़िर होने की इजाज़त चाही तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : ''ज़ुबैर के क़ातिल को जहन्नम की ख़बर सुना दो।''[2]

क़र्ज़ की अदाएगी :

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं कि जंगे जमल के मौक़अ़ पर मेरे वालिदे माजिद (ह़ज़रते

---

[1] .....المستدرک، کتاب معرفة الصحابة، رجوع الزبیر عن معرکة الجمل، الحدیث: ۵۶۲۸، ج ۴، ص ۴۴۵

[2] .....المرجع السابق، الحدیث: ۵۶۳۲، ج ۴، ص ۴۴۷

www.dawateislami.net

सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने अपने क़र्ज़ की अदाएगी के लिये मुझे वसिय्यत फ़रमाई और कहा : ''अगर तुम मेरे क़र्ज़ की अदाएगी से आ़जिज़ आ जाओ तो मेरे मौला से मदद त़लब करना।'' फ़रमाते हैं कि ख़ुदा की क़सम ! मैं न समझ सका कि मौला से इन की क्या मुराद है ? चुनान्चे मैं ने इस्तिफ़्सार किया : ऐ अब्बाजान ! आप का मौला कौन है ? तो इर्शाद फ़रमाया : ''मेरा मौला रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ है।'' पस आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़र्ज़ की अदाएगी में ऐसी ग़ैबी मदद हुई कि ख़ुदा की क़सम ! ज़र्रा भर दिक़्क़त व बोझ का एह़सास न हुवा क्यूं कि जब भी मैं कोई परेशानी या तंगी मह़सूस करता तो हाथ उठा कर अ़र्ज़ करता : ''ऐ ज़ुबैर के मालिको मौला ! इन के क़र्ज़ की अदाएगी में ग़ैबी मदद फ़रमा।'' दुआ़ मांगते ही मुद्दआ़ पूरा हो जाता।

फ़रमाते हैं कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जामे शहादत नोश फ़रमाया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कोई दिरहमो दीनार न छोड़ा। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के तर्के में सिर्फ़ ग़ाबह की चन्द ज़मीनें और कुछ (तक़रीबन पन्दरह) घर थे और क़र्ज़े का आ़लम येह था कि जब कोई शख़्स इन के पास अमानत रखने के लिये आता तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते : ''अमानत नहीं, क़र्ज़ है क्यूं कि मुझे इस के ज़ाएअ़ होने का अन्देशा है।'' लिहाज़ा जब मैं ने ह़िसाब लगाया तो वोह बीस लाख **(20,00,000)** बना पस मैं ने वोह क़र्ज़ अदा कर दिया।

www.dawateislami.net

इ़लावा अज़्ीं ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का त़रीक़ए कार येह था कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चार साल तक ह़ज के मौसिम में येह ए'लान करवाते रहे कि "जिस ने ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से क़र्ज़ लेना हो वोह आ कर ले जाए।" जब चार साल का अ़र्सा गुज़र गया तो ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने बक़िय्या माल वु-रसा में तक़्सीम कर दिया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वु-रसा में चार बीवियां थीं जिन में से हर एक के ह़िस्से में बारह बारह लाख आए।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरत से हमें गुनाहों से बचने, नेकियां करने, दुन्या से बे रग़बत होने और फ़िक्रे आख़िरत में मसरूफ़ रहने की म-दनी सोच मिलती है और येही नहीं बल्कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़िन्दगी का गोशा गोशा हमें रिज़ाए रब्बुल अनाम के ह़ुसूल की ख़ातिर जानो माल राहे ख़ुदा में क़ुरबान कर देने की दा'वत दे रहा है। पस सुस्ती छोड़िये और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم की सीरत पर अ़मल करते हुए दुन्या की इस मुख़्तसर सी ज़िन्दगी में नेकियों का एक ऐसा ज़ख़ीरा करने की कोशिश में लग जाइये जो आख़िरत की हमेशा रहने वाली ज़िन्दगी के लिये काम आ सके। ऐ काश ! हम ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम

---

[1] .....صحیح البخاری، کتاب فرض الخمس، الحدیث: ۳۱۲۹، ج۲، ص۳۵۰۔ ملتقطاً

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरत पर अ़मल करने वाले बन जाएं और जिस त़रह़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जन्नत की ख़ुश ख़बरी मिलने के बा वुजूद सारी ज़िन्दगी नेकियां करते रहे और ख़ुदाए **अह़कमुल ह़ाकिमीन** की ख़ुफ़्या तदबीर से डरते रहे हमारी ज़िन्दगी का भी एक एक लम्ह़ा रिज़ाए इलाही के ह़ुसूल में गुज़रने लगे। चुनान्चे,

तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **''दा'वते इस्लामी''** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर आ़शिक़ाने रसूल के साथ म-दनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर बन कर ख़ुद भी सुन्नतों के आ़मिल बन जाइये और पूरी दुन्या में सुन्नते मुस्त़फ़ा का डंका बजा दीजिये। शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ नसीह़त करते हुए क्या ख़ूब इर्शाद फ़रमाते हैं :

मुख़्तसर सी ज़िन्दगी है भाइयो !
नेकियां कीजे, न ग़फ़्लत कीजिये
गर रिज़ाए मुस्त़फ़ा दरकार है
सुन्नतों की ख़ूब ख़िदमत कीजिये

www.dawateislami.net

ماخذ و مراجع

1 **القرآن الکریم**، کلام باری تعالٰی

2 **ترجمۂ قرآن کنز الایمان**، اعلٰی حضرت امام احمد رضا ۱۳۴۰ ھ

3 **خزائن العرفان**، صدر الافاضل نعیم الدین مراد آبادی ۱۳۶۷ ھ

4 **صحیح البخاری**، امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری ۲۵۶ ھ، دار الکتب العلمیة

5 **سنن ابن ماجہ**، امام ابو عبد اللہ محمد بن یزید ابن ماجہ ۲۷۳ ھ، دار المعرفة، بیروت

6 **سنن الترمذی**، امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی ۲۷۹ ھ، دار الفکر بیروت

7 **المعجم الکبیر**، الحافظ سلیمان بن احمد الطبرانی ۳۶۰ ھ، دار احیاء التراث العربی

8 **مسند ابی یعلٰی**، امام احمد بن علی مثنی تمیمی ۳۰۷ ھ، دار الکتب العلمیة

9 **المستدرک**، امام ابو عبد اللہ محمد بن عبد اللہ حاکم نیشاپوری ۴۰۵ ھ، دار المعرفة، بیروت

10 **مسند البزار**، امام احمد بن عمرو بن عبد الخالق بزار ۲۹۲ ھ

11 **البحر الزخار**، امام احمد بن عمرو بن عبد الخالق بزار ۲۹۲ ھ، مکتبة العلوم والحکم

12 **عمدة القاری**، امام علامہ بدر الدین محمود بن احمد عینی ۸۵۵ھ، دار الفکر

13 **المصنف لابن ابی شیبہ**، حافظ عبد اللہ بن محمد بن ابی شیبة ۲۳۵ ھ، دار الفکر

14 **معرفة الصحابة**، امام ابو نعیم احمد بن عبد اللہ ۴۳۰ ھ، دار الکتب العلمیة

15 **الاستیعاب فی معرفة الاصحاب**، امام ابو عمرو یوسف بن عبد اللہ ۴۶۳ ھ، دار الکتب العلمیة

16 **معجم الصحابہ**، ابو القاسم عبد اللہ بن محمد بن عبد العزیز البغوی ۳۱۷ ھ مکتبة دار البیان دولة الکویت

www.dawateislami.net

17 **الاصابة فی تمییز الصحابة**، الحافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی ۸۵۲ھ، دار الکتب العلمیة

18 **حلیة الاولیاء**، امام ابو نعیم احمد بن عبد اللہ اصبہانی ۴۳۰ھ، دار الکتب العلمیة

19 **الوافی بالوفیات**، صلاح الدین خلیل بن ایبك الصفدی ۷۶۴ھ، دار احیاء التراث العربی

20 **الریاض النضرة**، امام احمد بن عبد اللہ المحب الطبری ۶۹۴ھ، دار الکتب العلمیة

21 **الطبقات الکبریٰ**، الامام محمد بن سعد البصری ۲۰۳ھ، دار الکتب العلمیة

22 **السیرة النبویة لابن هشام**، ابو محمد عبد الملک بن ہشام ۲۱۳ھ، دار المعرفة

23 **تاریخ مدینه دمشق**، الحافظ ابو القاسم علی بن حسن الشافعی، المعروف بابن عساکر ۵۷۱ھ، دار الفکر

24 **کتاب المغازی للواقدی**، محمد بن عمر بن واقدی، ۲۰۷ھ، مؤسسة الاعلمی للمطبوعات

25 **تاریخ الاسلام**، امام محمد بن احمد بن عثمان الذہبی ۷۴۸ھ، دار الکتب العربی

26 **البدایة والنهایة**، حافظ ابن کثیر ۷۷۴ھ، دار الفکر

27 **کرامات صحاب**، شیخ الحدیث حضرت علامہ عبد المصطفی اعظمی ۱۴۰۶ھ، مکتبة المدینة

28 **بہارِ شریعت**، صدر الشریعة مولانا امجد علی اعظمی، مکتبة المدینة

29 **دلائل الخیرات**، ابو عبد اللہ محمد بن سلیمان جزولی ۸۷۰ھ، ضیاء القران پبلی کیشنز

30 **حدائق بخشش**، اعلیٰ حضرت احمد رضا خان ۱۳۴۰ھ، مکتبة المدینة

31 **وسائل بخشش**، امیر اہلسنت مولانا محمد الیاس عطار قادری، مکتبة المدینة

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आशिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।"** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये **"म-दनी इन्आमात"** पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **"म-दनी क़ाफ़िलों"** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना की शाखें

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429
देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560
नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621
अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385
हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786
हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्ष, A.J. मुढोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net